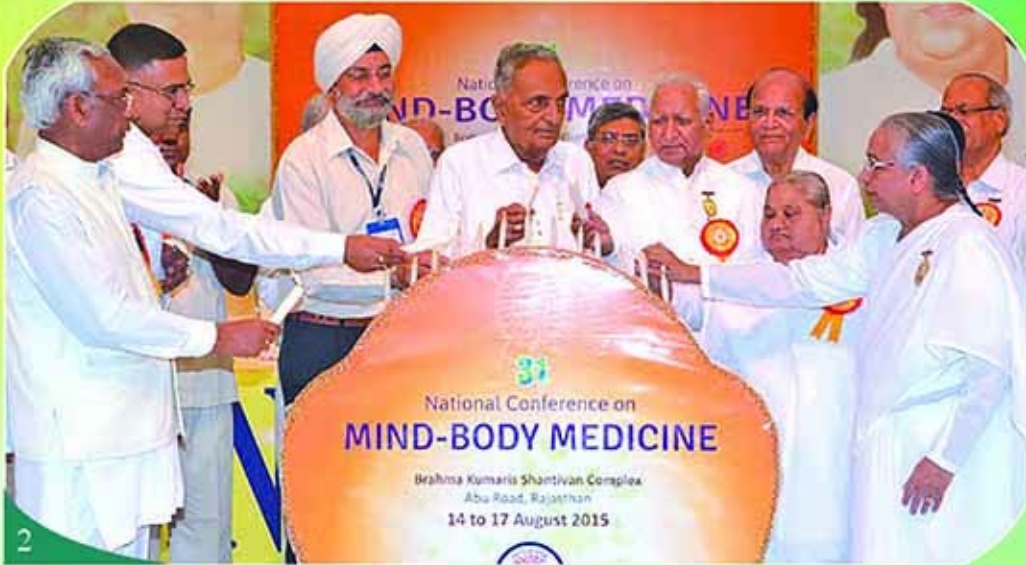


(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 51, अंक 3, सितम्बर, 2015, मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये



1. पुणे (मीरा सोसायटी)- पिसोली गाँव में 'जगदंबा भवन' के निर्माण के लिए भूमिशुद्धिकरण पट्टिका का अनावरण करने के बाद राजयोगिनी दादी जानकी के साथ ब्र.कु.रमेश शाह, ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.सुनदा बहन तथा अन्य। 2.शांतिवन (आबू रोड)- 'माइंड बॉडी मेडिसिन' सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए डॉ.वनारसी भाई, अपोलो हॉस्पिटल दिल्ली के सी.एफ.ओ.ओ. पी.शिवकुमार, महात्मा गांधी मेडिकल साउथर्न कमांड इंडियन आर्मी के मेजर जनरल डॉ.एल.एस.वोहरा, ब्र.कु.रमेश शाह, ब्र.कु.निर्वैर भाई, डॉ.अशोक मेहता, ब्र.कु.मोहिनी बहन, ब्र.कु.मुनी बहन, डॉ.सतीश गुप्ता तथा अन्य।



1. वीरगंज (नेपाल)- नेपाल के प्रधानमंत्री भ्राता सुशील कोईराला को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रविणा बहन। 2.रायपुर- केन्द्रीय पर्यावरण मंत्री भ्राता प्रकाश जावड़ेकर, छ.ग. के मुख्यमंत्री डॉ.रमन सिंह, व.कु.कमला बहन, ब्र.कु.सविता बहन तथा वरिष्ठ अधिकारीगण वृक्षारोपण करते हुए। 3.पुणे- केन्द्रीय रेल मंत्री भ्राता सुरेश प्रभु को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.रूपा बहन, ब्र.कु.गीतिका बहन तथा ब्र.कु.दीपक हरके। 4.गांधीनगर- गुजरात की मुख्यमंत्री आनंदी बहन पटेल, ब्र.कु.कैलाश बहन को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड तथा प्रमाणपत्र से सम्मानित करते हुए। 5.रांची- झारखण्ड के मुख्यमंत्री भ्राता रघुवर दास को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.निर्मला बहन। 6.सोनीपत- हरियाणा के मुख्यमंत्री भ्राता मनोहरलाल खट्टर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.प्रमोद बहन तथा ब्र.कु.सुनिता बहन। 7.खिलावर- जम्मू एवं कश्मीर के उपमुख्यमंत्री डॉक्टर निर्मल सिंह तथा बहन ममता सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सन्तोष बहन। 8.सूरीनाम- सूरीनाम के उप-राष्ट्रपति भ्राता रॉबर्ट अमीराली से मुलाकात करते हुए ब्र.कु.मोहन सिंघल भाई। साथ में ब्र.कु.लॉईस बहन तथा ब्र.कु.रेणुका बहन। 9.चम्बा- हिमाचल प्रदेश के वनमंत्री भ्राता ठाकुर सिंह भरमौरी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.राज बहन।

माता प्रथम गुरु

माता ही बच्चे का सबसे पहला गुरु है परन्तु आज माता-पिता इस बात का तो ख्याल रखते हैं कि बच्चे मोटे-ताजे और पढ़े-लिखे हुए हों परन्तु उनकी आत्मा भी बलवान हो और वे ऐसी विद्या भी पढ़ें जिससे कि उनका चरित्र ऊँचा उठे – इस बात पर वे कम ध्यान देते हैं।

आज देश के नेताओं की, मन्त्रियों की, विद्यार्थियों की, कारखानादारों की तथा मजदूरों की जो स्थिति है, उसकी सारी ज़िम्मेवारी माता पर है क्योंकि बच्चे का शुरू का समय अधिकतर माता के साथ गुज़रता है और माँ से उसका बहुत प्यार होता है। माँ शुरू से उसे जैसे चाहे वैसे ही मोड़ सकती है। जब बच्चा पंगूड़े में होता है तब माँ उसे चाहे तो राजा बनने के योग्य बना दे और चाहे तो उसे बिगाड़ कर एक आतंकवादी, उग्रवादी बना दे। माता के संस्कारों और विचारों का प्रभाव तो गर्भ में भी बच्चे पर माना गया है। अतः प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय माताओं-कन्याओं पर ही अधिक ध्यान देता है क्योंकि जब यह मातृ-शक्ति जागेगी तभी देश का कल्याण होगा, तब देश के मनुष्य सदाचारी होंगे।

देश की धरती, गाय, गंगा आदि सभी 'माँ' के प्रतीक हैं क्योंकि उनमें माँ के कुछ-कुछ लक्षण पाये जाते हैं। तो जब इनके लिए लोग इतनी आस्था रखते हैं, वे अपनी माँ के प्रति कितना न स्नेह रखते होंगे? दुख के समय मनुष्य को माँ ही याद आती है। माँ का सम्बन्ध ऐसा है कि परमात्मा को भी पहले 'माता', बाद में 'पिता' शब्द से सम्बोधित किया जाता है क्योंकि यदि परमात्मा में माँ-जैसा वात्सल्य और माँ-जैसी कोमलता न हो तो आत्मा उसे याद भी न करे। यह सब कहने का भाव यह है कि यदि स्वयं माता-पिता उस परम माता-पिता के अनुशासन में नहीं होंगे तो उनके बच्चे उनके अनुशासन में कैसे रहेंगे?

माता-पिता को घर में जोश करते देखकर ही तो बच्चे जोश करना सीखते हैं। पिताजी को ब्लैक का पैसा कमाते जानकर अथवा दफ्तर से कागज तथा स्टेशनरी घर लाते देखकर ही तो बच्चे पक्के चोर बनते हैं। बाप में सिगरेट, बीड़ी या शराब की आदत देखकर ही तो बच्चों में ये दोष आते हैं। अतः माता-पिता में उग्र स्वभाव, उच्छृंखलता या चरित्रहीनता की कोई बात देखकर अथवा उनका प्रोत्साहन पाकर अथवा माता-पिता द्वारा बे-रोक-टोक खराब संग पाकर ही बच्चों का जीवन बिगड़ता है। इस स्थिति का सुधार तभी हो सकता है जब एक ओर तो माता-पिता को और दूसरी ओर विद्यार्थियों तथा शिक्षकों को परम माता-पिता और परम शिक्षक परमात्मा द्वारा बताये गए अनुशासन का परिचय मिले। ❖

❖ अमृत सूची ❖

- ❖ संकटों का समाधान (सम्पादकीय) 4
- ❖ प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के .6
- ❖ ईश्वरीय कारोबार में8
- ❖ खुशी के रचयिता11
- ❖ बाबा के साथ का कमाल12
- ❖ मैं क्या था, क्या बन गया13
- ❖ आध्यात्मिकता और भ्रान्तियाँ14
- ❖ पत्नी का स्वभाव बदल गया ..16
- ❖ मिल गये बाबा17
- ❖ बेटी बचाओ (कविता)18
- ❖ 'पत्र' संपादक के नाम18
- ❖ बिना शर्त बाँटें खुशियाँ19
- ❖ तू मेरा ध्यान कर20
- ❖ पुत्र बना गुरु21
- ❖ मानव जीवन में धन24
- ❖ सचित्र सेवा समाचार27
- ❖ बनने वाले से बनाने वाला28
- ❖ छोटी-सी पुस्तिका29
- ❖ सचित्र सेवा समाचार30
- ❖ मूल्य, प्रत्यक्ष दिखने पर ही ...32
- ❖ ग्लोबल हास्पिटल में33
- ❖ 'ज्ञानामृत' मेरी अलौकिक ...34

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	100 /-	2,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	100/-	2,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	1,000 /-	10,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	1,000/-	10,000/-

शुल्क केवल 'ज्ञानामृत' अथवा 'द वर्ल्ड रिन्युअल' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।

शुल्क के लिए सम्पर्क करें -
09414006904, 09414423949
hindigyanamrit@gmail.com

संकटों का समाधान

विपत्ति में फँसे मानव के प्रति संवेदना और सहानुभूति रखना मानव का मूल स्वभाव है। इसका प्रमाण हमें अनेक बार देखने को मिलता है। जब नेपाल में भयंकर भूकम्प आया तो सरकार और नागरिकों ने जी खोलकर मदद की और अभी भी कर रहे हैं। दूर-दराज़ के स्थानों पर जहाँ मानव की पहुँच मुश्किल थी, हेलिकाप्टर से खाद्य सामग्री तथा अन्य ज़रूरत की चीज़ें उपलब्ध कराई गईं। विपत्ति चाहे मानव द्वारा निर्मित की गई हो या प्राकृतिक हो, हम शीघ्रता से नियन्त्रित करने में लग जाते हैं।

रोज़ का संकट

प्राकृतिक विपत्तियाँ, जो वर्षभर में, विश्व के किसी एक कोने में या दूसरे कोने में कभी-कभी ही आती हैं, उनसे हम निपट लेते हैं परन्तु एक विपत्ति या संकट जो आज की मानवता पर सदैव छाया रहता है वह है दुख, अशान्ति, अपवित्रता, हिंसा और बीमारियों का संकट। यह तो रोज़ का संकट है और किसी एक कोने में नहीं बल्कि हर मानव पर, हर स्थान पर टूट रहा है, इससे बचने में हम कैसे सक्षम बनें, बहुत बड़ा विचारणीय प्रश्न है।

भौतिक प्रयास निरन्तर जारी

अनुभव कहता है, मानव को दुख-अशान्ति से बचाने के भौतिक प्रयास निरन्तर जारी हैं। नई-नई योजनाओं के द्वारा मानव की शिक्षा, रोज़गार और जीवन-स्तर को उच्च बनाने के प्रयास हो रहे हैं। इनसे सुविधाओं में वृद्धि हुई है, मानव जीवन के क्रिया-कलाप आसान हुए हैं और कम समय में अधिक कार्य कर लेने की क्षमता भी विकसित हुई है परन्तु मानव के भीतर सुलगते दुख-अशान्ति के दावानल में थमाव नहीं आ पाया है।

बहुत ताकत होती है शुद्ध वस्तु में

वास्तव में स्थूल जगत की समस्याएँ, स्थूल प्रयासों से

मिटायी जा सकती हैं परन्तु मनोजगत में उठने वाले चिन्ता, तनाव, नकारात्मकता आदि के तूफान को मिटाने के लिए प्रयास भी मानसिक और आध्यात्मिक चाहिएँ। आध्यात्मिकता को अंग्रजी में कहते हैं Spirituality (स्पीचुअलिटी) जिसका अर्थ है Spirit in reality अर्थात् आत्मा का मूल, शुद्ध स्वरूप। शुद्ध वस्तु में ताकत बहुत होती है जैसे शुद्ध घी की खुशबू दूर तक फैलती है, उसे खाकर शरीर को ताकत मिलती है, शुद्ध दवा की खुराक मरीज को ठीक कर देती है, इसी प्रकार आत्मा भी अपने मूल स्वरूप को पहचानकर जब उसमें टिक जाती है, उस स्वरूप का अनुभव करने लगती है तो उसकी शक्ति कई गुणा बढ़ जाती है। वह अपने मूल गुणों की खुशबू को दूर-दूर तक पहुँचाने, फैलाने और दूसरे मनुष्यों के मूल गुणों को जागृत करने में सक्षम बन जाती है।

शुद्ध आत्मा मिटा सकती है अशान्ति को

आत्मा की इस पवित्र शक्ति का प्रयोग हम संसार की आत्माओं के मानसिक संकट मिटाने में कर सकते हैं। जैसे साइंस का बनाया हेलिकाप्टर ऊँचाई पर जाकर, विपत्ति में फँसे व्यक्तियों को वस्त्र, खाद्य पदार्थ तथा अन्य ज़रूरी चीज़ें उपलब्ध करा सकता है, ऐसे ही शुद्ध आत्मा भी हेलिकाप्टर से भी तीव्र गति से अन्तःवाहक शरीर (सूक्ष्म शरीर) द्वारा ऊपर जाकर, परमात्मा पिता का सान्निध्य प्राप्त कर, अपने अन्दर की सुख, शान्ति, पवित्रता की किरणों से किसी भी स्थान या व्यक्ति के अन्दर की कमी-कमज़ोरी, चिन्ता, अशान्ति को मिटा सकती है।

आत्मा रूपी विमान को परमधाम में स्थित कर दें

अमृतवेले के समय में आत्मा रूपी विमान, जिसमें सुख, शान्ति, पवित्रता आदि गुणों का सूक्ष्म बल भरा है, को

हम ऊँचे से ऊँचे परमधाम में ले जाकर स्थित कर दें और वहाँ मौजूद परमपिता परमात्मा शिव से कम्बाइन्ड होकर प्रकृति तथा आत्मा दोनों पर इन गुणों की बौछार करें। यह एक सुन्दर आध्यात्मिक अनुभव है। परमधाम तीनों लोकों में सबसे ऊँचा (Top Point) स्थान है। वहाँ से प्रवाहित की जाने वाली शक्ति सारे ग्लोब के हर जड़-चेतन को प्राप्त होगी। भीतर के नेत्र से महसूस होगा कि मैं आत्मा अतीन्द्रिय आनन्द में डूबी हूँ, परमात्मा पिता की सुख, शान्ति से भरपूर शक्तिशाली किरणें मुझ आत्मा के माध्यम से धरती पर बरस रही हैं और आत्माएँ उन्हें अपने अन्दर भर कर राहत महसूस कर रही हैं।

निर्माण और विनाश – दोनों शक्तियाँ

विज्ञान द्वारा निर्मित विमान, हेलिकाप्टर आदि जहाँ एक ओर मानव की आवश्यकताएँ पूर्ण कर उसे जीवन प्रदान करते हैं वहीं दूसरी ओर आवश्यकता पड़ने पर विनाश का ताण्डव भी रचते हैं। शक्तिशाली मिसाइल्स फेंक कर पल भर में वस्तुओं और व्यक्तियों का नामोनिशान तक मिटा देते हैं अर्थात् विज्ञान के पास निर्माण और विनाश – दोनों प्रकार की शक्तियाँ हैं। आध्यात्मिक बल से सम्पन्न शुद्ध आत्मा में भी दोनों शक्तियाँ हैं। उसके पास भी शक्तिशाली पवित्र संकल्पों रूपी ऐसे मिसाइल्स हैं जिनके द्वारा वह व्यक्तियों और वातावरण में फैले अपवित्रता, अशान्ति, चिन्ता के प्रकम्पनों को नष्ट कर सकती है। शुद्ध आत्मा में भी सात्विक की स्थापना और तामसिक का विनाश – ये दोनों शक्तियाँ निहित हैं।

भगवान शिव कहते हैं, “वहाँ है साइंस का विमान और आपका है साइलेंस का। साइंस का रचता है साइलेंस। साइलेंस की शक्ति से ही साइंस निकली है। साइंस ने बहुत उन्नति की है जो एक स्थान पर बैठे हुए अपने अस्त्रों द्वारा एक सेकेण्ड में विनाश कर सकते हैं। तो क्या आत्मा का साइलेंस बल कहाँ भी बैठे एक सेकेण्ड में काम नहीं कर सकता।”

अपना लाल गँवाय कर दर-दर मांगे भीख

आत्मा में बल भरने के लिए या कहिए उसके सोए बल को जागृत करने के लिए एकान्त अभ्यास की ज़रूरत है। जैसे फूल में खुशबू होती है पर उसे कपड़े या किसी अन्य आवरण से ढक दिया जाये तो उसका रूप और खुशबू दोनों ही छिप जाते हैं। आत्मा भी मूल रूप में खुशबूदार फूल है, उसमें सात गुणों की खुशबू भरी है। जब आत्मा देहभान रूपी आवरण से अपने को ढक लेती है अर्थात् अपने स्वरूप को न देख, शरीर को ही ‘मैं’ मान लेती है तो उसका रूप और गुण दोनों छिप जाते हैं। इसी पर कहावत बनी है, अपना लाल गँवाए कर दर-दर मांगे भीख। अपने भीतर के सुख-शान्ति के लाल को गँवाकर वह बाहरी जगत में सुख-शान्ति की भीख मांगने लगती है जिससे संसार में सुख-शान्ति रूपी गुणों का संकट खड़ा हो जाता है।

इस संकट से निपटने के लिए देह के आवरण में छिपी आत्मा को देखने का अभ्यास करें, उसके ज्योतिबिन्दु स्वरूप को मनःपटल पर स्पष्ट देखें और उस अनुभव में खोए रहें। आत्मानुभूति द्वारा ही आत्मिक गुणों की अनुभूति होती है। गुणों की अनुभूति से ही दुख-अशान्ति रूपी अवगुणों का संकट टाला जा सकता है।

— ब्र.कु. आत्म प्रकाश

ईश्वरीय शक्तियों और तरदानों
से भरपूर अनेक
मनभावना राशियाँ
ज्ञानामृत कार्यालय में प्राप्त हुई हैं।
रुनेही प्रेषक बहनों को हार्दिक
आभार और दिल की दुआयें!



प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्न: योगाभ्यास में किस बात का ध्यान रखना है?

उत्तर: योग में ध्यान रखते हैं, दूसरा कोई याद न आये, कल की बात भी याद नहीं आये क्योंकि कल जो हुआ, अच्छा और कल जो आने वाला है वो भी अच्छा है इसलिए उसकी डिटेल् में नहीं जायेंगे। पर याद की शक्ति और कोई बात याद करने नहीं देती है। न पराई, न पुरानी। अगर पुरानी कोई बात होगी, पकड़के बैठे हैं तो यह है माया। तो अभी तक भी अगर माया मेरे ऊपर काम करे तो यह अच्छा नहीं है इसलिए रियलाइज करके उस माया को अन्दर से खत्म करना है।

बाबा ने हमको समझाया है, बच्चे, रियलाइज करो, सच क्या है, उसे कर लो। झूठ क्या है, उसे नहीं करो। व्यर्थ क्या है, वह नहीं करने का है। समर्थ क्या है, वो करना है, यह है रियलाइज करना। समर्थ नाम ही उमंग-उत्साह ले आता है। थोड़ा व्यर्थ उमंग-उत्साह निकाल देता है। हम जितना आगे बढ़ते जाते हैं उतना माया बड़ी दुश्तर होकर हमारे पीछे पड़ती है।

ज्ञान को स्पष्ट और सार रूप में अन्दर रखना हमारे लिए फायदा है। किसी से मिलो तो भी सार में बात करो। यह बात मेरे लिए अच्छी है, फायदे वाली है। कोई भी मिले, हैलो करो, टोली खिलाओ, ब्लैसिंग दो, साथ में दृष्टि भी दो और ऐसा कुछ बोलो जो वरदान बन जाये।

जैसे मैं हल्की हूँ, आप भी हल्के हो जाओ। इसके लिए

कुछ भी सोचने का नहीं है ताकि एवरहेल्दी रह सको। हेल्थ भी तभी है जब माइन्ड हेल्दी है माना कोई कमी-कमजोरी नहीं है। कमजोरी से बीमारी पैदा होती है। कोई इन्फेक्शन होता है तो कुछ एंटीबायोटिक दवाई लेनी पड़ती है। कदम-कदम पर योगबल वायुमण्डल को बड़ा अच्छा बना देता है। संगमयुग है मौज मनाने का। जो कभी मूँझते हैं वो कभी मौज नहीं मना सकते हैं। किसका चेहरा मूँझा हुआ होता है माना समझ की कमी है।

प्रश्न: भाग्य और भावी में क्या फर्क है?

उत्तर: मैंने कहा, भावी भले बनी पड़ी है पर भाग्य बनाना है। यह नहीं कहेंगे, जो भावी में होगा परन्तु शान्त रह करके अपना पुरुषार्थ करेंगे। तो यहाँ है भगवान, यहाँ है भाग्य, बीच में हूँ मैं। तो ऐसे क्लास में हाज़िर होना भी भाग्य है। और वो सर्वशक्तिवान जो शक्ति देने वाला है, आपेही देता है। मैं मांगती नहीं हूँ, बाबा शक्ति दो, गुण दो, यह मांगना शान नहीं है। किसी भी बात का मुझे सामना नहीं करना है, सहन नहीं करना है, उसी घड़ी साइलेंस की शक्ति अनेक काम आपे ही ठीक कर देती है। कोई भी बात हमको थोड़ा भी अन्दर में टच न करे। अभी यह बात है, क्या करूँ? नहीं, यह शान नहीं है। निमित्त बने हुए हैं तो निर्माणचित्त रहना जरूरी है। इसमें कइयों को क्वेश्चन उठता है, चाहे भारत, चाहे विदेश में इतना बड़ा कार्य चल रहा है, क्या कोई बोझ नहीं है? हम कहती, कुछ भी नहीं

है, कोई जवाबदारी नहीं है। अन्दर ही अन्दर लाइट रहना, माइट खींचना, लाइट हाउस का काम करना। अन्दर में मानसिक शक्ति ऐसी हो, लाइट हाउस इतना पावरफुल हो। बाबा ऊपर से इशारा दे रहा है, हम कैच करें, बस। अभी यह है आजकल की सेवा।

प्रश्न: पुराने कर्म कैसे कटें और मिटें?

उत्तर: कर्म की फिलोसॉफी बहुत गहरी है। पुराने जो भी कर्म हैं वो मिटें और कटें। जो किया है मिट जाये और श्रेष्ठ कर्म से कट जाये। ऐसा मिटे जो नाम-निशान भी न रहे। कटे कैसे? ज्ञान-योग की ताकत से कट गया, दूसरा ज्ञान-दाता के स्नेह से मिट गया। अभी कोई भी कर्म ऐसा न हो जिसकी भोगना भोगनी पड़े। इसके लिए कर्म करें पर योगी रहें क्योंकि हम राजयोगी हैं, कर्म बिगड़ रह नहीं सकते हैं। कर्म कैसे करने हैं वो भी बाबा ने सिखाया है। थोड़ी-बहुत जो गलती हो गई, बाबा वो भी माफ करके अभी भी श्रेष्ठ कर्म करने की शक्ति दे रहा है। तभी योगबल है, नहीं तो योग ऐसे ही नहीं लगता। विकर्म विनाश हैं, कोई विकल्प नहीं आ सकता, न किसी का चक्कर, न टक्कर। कोई किसी के चक्कर में आ जाता है, कोई किसी के साथ टक्कर खाता है। कोई कर्म ऐसे करता है, प्रभाव में आता है और प्रभाव डालता है। तो यह क्या है? सम्भालो। मैं कौन हूँ? मेरा कौन है? बाबा ने तीसरा नेत्र खोला है, त्रिकालदर्शी बनाया है। तुम ऐसे श्रेष्ठ कर्म करो जो तेरे को देख और करें, जैसे मेरे बाबा ने किए।

प्रश्न: सर्वशक्तिवान से माइट कब मिलेगी?

उत्तर: मुख्य बात है सदा लाइट रहो तो आपेही माइट मिलेगी। साइलेंस में ऑटोमेटिक सब ठीक हो जाता है। साइलेंस में रहने से रॉयल्टी है, फिर थोड़ा बोलने में काम हो जाता है। बिना बोले भी काम हो जाता है। कई वण्डर देखती हूँ। साइलेंस में रहने से बाबा के बिना बुलाये हम

हाज़िर हो जाते थे, यह मैंने देखा है। हम जो चाहते हैं वो काम एक जगह बैठे भी कर सकते हैं वायब्रेशन्स से। अभी प्रेजेन्ट समय आप सभी को गिफ्ट दे रही हूँ, साइलेंस में रहने का अभ्यास करो, जो बाबा हमको यूज करे। शक्ति बाबा की है पर साइलेंस में मैं फ्री हूँ, बाबा को यूज करना सहज है। अभी देखा, यहाँ साइलेंस से सब कारोबार बहुत अच्छा चल रहा है। सब खुश हैं, कोई भारी नहीं है। ऐसी कोई खबर सुनाई नहीं दी जिसका मुझे कोई फिकर करना पड़े।

प्रश्न: सबसे बड़ी ठोकर कौन-सी है?

उत्तर: हम बच्चों को सिर्फ फॉलो करना है, श्रीमत को सिरमाथे पर रखना है। अन्दर से विदेही की प्रैक्टिस नेचुरल हो, विदेही और ट्रस्टी रहने का बाबा ने वरदान दिया है। जब अन्दर से बाबा शब्द निकलता है तो दिल कहता है, वह मेरी माँ भी है। इतना प्यार करेगा कौन! जितना करती है मीठी माँ। जैसे हैं वैसे हैं, अपना बना लिया है। उसके रिटर्न में मेरे को मुसकराना है। बाबा ने आत्मा का ज्ञान देकर लाइट बना दिया है, आत्मा लाइट बन गई। लाइट माना हल्का और लाइट माना रोशनी। दुनिया में अन्धकार भी है, नयनहीन भी हैं। बाबा ने रोशनी भी दी है, नयन भी दिये हैं। तो अभी काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की ठोकर खाने से बच गये। सबसे बड़े ते बड़ी ठोकर है काम या क्रोध के वश होना, जितने भी अच्छे कर्म किये ना वो सब इससे खलास। ज़रा भी दृष्टि-वृत्ति कामेशु, क्रोधेशु, लोभ, मोह के वश न हो। अन्दर ही अन्दर सच्चा पुरुषार्थी, तीव्र पुरुषार्थी, निरंतर पुरुषार्थी होकर रहना है। अन्दर यही भावना है कि किसी में भी काम-क्रोध का अंश न हो। लेकिन यह होगा सोलकॉन्सेस बनने से। परमात्म शक्ति हमको आत्म-अभिमानि बनाती है। ❖

विकल्प बहुत हैं बिखरने के लिए,
संकल्प एक ही काफी है संवरने के लिए

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत - 22

ब्रह्माकुमार रमेश, मुंबई (गामदेवी)

ईश्वरीय कारोबार में आदर्श व्यवस्था संपन्न करने की ज़रूरत के बारे में लिखी गई लेख शृंखला के संदर्भ में ब्रह्मा बाबा के द्वारा मुझे जो मार्गदर्शन मिला, उसके बारे में अनुभव सहित अपने विचार लिखता हूँ।

जब नवंबर, 1968 में ट्रस्ट के मैनेजिंग ट्रस्टी के रूप में कारोबार स्वीकार किया तब मैंने ब्रह्मा बाबा को कहा कि मुझे मैनेजिंग ट्रस्टी के रूप में कारोबार का अनुभव नहीं है इसलिए आपसे मुझे मार्गदर्शन मिलना चाहिए। बाद में एक पत्र में बाबा ने लिखा कि अपनी बुद्धि की लाइन क्लीयर रखना तो बाबा तुम्हें प्रेरणा (Touching) द्वारा मार्गदर्शन देगा अर्थात् टचिंग लेने के लिए बुद्धि की लाइन क्लीयर होनी चाहिए, यह बात मुझे बाबा के पत्र से पता चली। मैंने इस बात को साधारण रूप से लिया।

जब दादा विश्व किशोर बॉम्बे में हॉस्पिटल में थे और उनका आपरेशन हुआ था, उस समय उन्हें बहुत दर्द था जिस कारण रात को नींद नहीं आती थी। तब ब्रह्मा बाबा ने सारी रात जागकर उन्हें सकाश दिया ताकि उन्हें अच्छी नींद आये। इस कारण मैंने भी समझा था कि जैसे दादा विश्व किशोर को सकाश देकर ब्रह्मा बाबा ने नींद का अनुभव कराया, उसी प्रकार मुझे भी ब्रह्मा बाबा ट्रस्ट के कारोबार में प्रेरणा देंगे और मददगार बनेंगे। उस समय मुझे यह ख्याल में भी नहीं था कि ब्रह्मा बाबा का अव्यक्त पार्ट शुरू होने वाला है, इसकी सूचना या चेतावनी वे पहले से दे रहे हैं। उस समय संकल्प ही नहीं था कि ब्रह्मा बाबा अव्यक्त हो सकते हैं।

साकार बाबा ने अपने अव्यक्त होने के बारे में अनेकों को गुप्त इशारा दिया। एक साल पहले, 1968 में एक भाई



ब्रह्मा बाबा और विश्वकिशोर भाऊ के साथ रमेश भाई

अपने व्यापार के संबंध में बात करने ब्रह्मा बाबा के पास आया। तब बाबा ने मेरे सामने ही कहा कि इस बाप से संपर्क हो या ना हो पर इस रमेश बच्चे से संपर्क करना और इसके मार्गदर्शन पर चलना, ऐसे समझना कि यह मार्गदर्शन मैंने ही दिया है।

उस समय हमने यही समझा कि हो सकता है कि ब्रह्मा बाबा व्यस्तता के कारण पत्र व्यवहार द्वारा कारोबार नहीं कर पा रहे हैं इसलिए उन्होंने मुझे यह ड्यूटी दी है। बाबा ने इशारा तो दिया पर हम समझ नहीं पाये। हमें पूर्ण विश्वास था कि ब्रह्मा बाबा तो हमारे साथ सदा रहेंगे ही।

बुद्धि की लाइन क्लीयर रखने के बारे में एक प्रसंग याद आता है। हम जब 1971 में विदेश सेवा पर गये, उस समय अव्यक्त बापदादा ने कहा कि जब भी विदेश में सेवा अर्थ बाहर निकलो तो पाँच मिनट बाप की याद में बैठकर निकलना ताकि बाप को लास्ट मिनट आपको प्रेरणा द्वारा टच करना हो तो कर सकें। ऐसा ही हुआ। हम लोग एक प्रदर्शनी के लिए निकले। लिफ्ट से नीचे पहुँचे, इतने में याद आया कि बाबा को पाँच मिनट याद करके नहीं निकले

इसलिए वापिस ऊपर गये और बाबा की याद में बैठे। हमारे साथ शील बहन थी जो संदेशी थी। उस पाँच मिनट के समय में ही बाबा ने शील बहन को अपने पास सूक्ष्मवतन में बुला लिया और कहा कि आप बच्चे पूरी तैयारी करके नहीं जाते हो, आपने सब लिया परंतु मुख्य अतिथि द्वारा जो दीप प्रज्वलन होना है, उसके लिए माचिस (Matchbox) नहीं ली इसलिए बाबा ने टच करके आपको वापस बुलाया। हमने देखा, हम जो साधन लेकर जा रहे थे, उनमें माचिस नहीं थी। अगर माचिस नहीं होती तो दीप प्रज्वलन कैसे होता, यह समस्या हो जाती थी।

एक दूसरा मिसाल है, मुम्बई में चर्चगेट रेलवे स्टेशन के सामने क्रॉस मैदान में आध्यात्मिक मेले के उद्घाटन के लिए सुबह 9 बजे गुजरात के गवर्नर आये थे। उन्होंने रिबन काटी, इसके बाद दीप प्रज्वलन का कार्यक्रम होना था पर किसी के पास माचिस नहीं थी। गवर्नर ने कहा, आपके यहाँ कोई सिगरेट नहीं पीता क्या? उसके पास माचिस मिल जायेगी। हमने कहा, नहीं, हमारे यहाँ कोई भाई सिगरेट नहीं पीता। गवर्नर को आश्चर्य हुआ। इतने में एक भाई दौड़कर चर्च गेट स्टेशन से माचिस ले आया। फिर गवर्नर ने दीप प्रज्वलन करके मेले का वास्तविक उद्घाटन किया। इन सबमें 15 मिनट वेस्ट हो गये। गवर्नर भी सोचने लगा, इनके पास माचिस नहीं होती, कमाल की बात है।

इस प्रकार हमने अनुभव किया कि माचिस जैसी छोटी-सी लेकिन महत्वपूर्ण वस्तु से विदेश और बॉम्बे की सेवाओं में क्या फर्क पड़ सकता है।

मैं हमेशा ध्यान रखता हूँ कि ईश्वरीय कारोबार करते समय बुद्धि की लाइन क्लीयर रहे। इसी संदर्भ में एक और बात याद आती है। एक बार मेरा बॉम्बे में आपरेशन हुआ था, हॉस्पिटल में आपरेशन के तीन-चार दिन बाद मुझे तेज दर्द शुरू हो गया। यह दर्द दोपहर 1 बजे तक लगातार चलता रहा। इसलिए हमारी शांता माता ने शील दादी को बुलाया। शील दादी हॉस्पिटल में आई और मुझे दर्द में

तड़पते देखकर ध्यान में चली गई और बाबा से कहा कि रमेश भाई को बहुत दर्द है। बाबा ने शील दादी को कहा कि आप बच्चों की बुद्धि की लाइन क्लीयर होनी चाहिए, वह नहीं है, मैं काफी देर से इंतज़ार कर रहा था कि कब लाइन क्लीयर हो और मैं टच करके रमेश बच्चे के लिए दवाई बताऊँ।

इस प्रकार जब समस्या आती है तो लाइन क्लीयर नहीं होती है। हम कारोबार में व्यस्त हो जाते हैं जिस कारण बुद्धि की लाइन क्लीयर नहीं होती और बाबा से आवश्यक टचिंग नहीं मिल पाती। इस कारण समस्या, समस्या ही रहती है, समाधान नहीं मिल पाता जिसमें काफी समय बर्बाद चला जाता है।

सेवाकेन्द्र की टीचर्स बहनों को मेरा अनुरोध है कि वे इस विषय पर क्लास कराये कि बुद्धि की लाइन को क्लीयर कैसे रखें जिससे बुद्धि हर समय बाबा से जुड़ी रहे। अगर हर समय बाबा की याद रहे तो बाबा की मदद मिलती रहेगी और समस्या रूपी पहाड़ राई और राई से रूई बन जायेगा।

इसी संदर्भ में एक प्रश्न उठता है कि अभी तो संगमयुग में शिवबाबा है तो हम बच्चों को प्रेरणा के द्वारा मार्गदर्शन देते रहेंगे परंतु सतयुग में कारोबार कैसे होगा? वहाँ तो हम आत्मायें ही होंगी और हम आत्माओं को कैसे शिवबाबा प्रेरणा देकर अच्छे कर्म करायेंगे।

उत्तर तो बहुत सहज है। मिसाल के तौर पर आजकल मैजारिटी मोबाइल फोन का प्रयोग करते हैं और उसकी बैटरी को हम पहले से चार्ज करते हैं, एक बार चार्ज हो जाने पर उसे हम कहीं भी ले जा सकते हैं और इस्तेमाल कर सकते हैं।

शिवबाबा भी ऐसे ही इस समय परमात्म शक्ति द्वारा हम आत्माओं की बैटरी को चार्ज कर रहे हैं, हममें आत्मिक शक्ति भर रहे हैं और यह शक्ति ही हमें सतयुग-त्रेतायुग के कारोबार में काम में आयेगी। इस शक्ति के लिए हम

कहते हैं कि परमात्मा हम आत्माओं में आत्मिक बल भरते हैं, एक बार यह शक्ति भर जाती है तो फिर उस के द्वारा हम सभी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

हम गीता के अर्जुन नहीं हैं जो इस दुविधा में था कि युद्ध करे या ना करे या हम शेक्सपियर के ड्रामा के पात्र हेमलेट भी नहीं हैं जो इस दुविधा में था कि Do or not to do. To be or not to be. इस प्रकार की दुविधा में अर्जुन रहता या हेमलेट रहता है। शिवबाबा ने हमें जो आत्मिक शक्ति दी है, उसके आधार पर हममें सही निर्णय लेकर, सही कर्म करने की शक्ति आ जाती है।

योग की सरल परिभाषा है, आत्मा की बैटरी चार्ज करना। चार्ज की हुई बैटरी द्वारा आगे का कारोबार कर सकते हैं। सतयुग में परमात्मा का दिया ज्ञान तो नहीं रहेगा परंतु उस ज्ञान से उत्पन्न श्रेष्ठ संस्कार तो अवश्य रहेंगे। आत्मा की परिभाषा है कि यह मन, बुद्धि, संस्कार सहित है। श्रेष्ठ संस्कार हमारे में अभी परमात्म शक्ति द्वारा भर रहे हैं। कई बार बैटरी चार्ज करने के लिए रखते पर चार्जर से कनेक्शन नहीं हो पाता उसी प्रकार यह लेख भी कई भाई-बहन पढ़ते हैं। कई पढ़कर रख देते और अपने संस्कारों में इन बातों को भरने का प्रयास नहीं करते हैं, कई इस लेखमाला को पढ़कर साकार-निराकार द्वारा सिखाई बातों को संस्कार रूप में अपने में भरने का प्रयत्न करते हैं। यह हम पर है कि हम कहाँ तक अपनी बैटरी को ज्ञान-योग से चार्ज करते हैं और कहाँ तक अपने मन-बुद्धि की लाइन क्लीयर रखते हैं। मन-बुद्धि की लाइन क्लीयर रखने का फायदा सिर्फ संगमयुग तक सीमित नहीं है, यह संस्कार बन जायेगा तो इसके आधार पर सतयुग-त्रेतायुग में भी श्रेष्ठ कारोबार कर सकेंगे।

उम्मीद है कि हम सभी भाई-बहनों अपनी बैटरी को सतोप्रधान और सतो शक्तियों से चार्ज करेंगे तभी हमें श्रेष्ठ मार्गदर्शन मिलेगा और हमारे द्वारा विश्व कारोबार को भी मिलता रहेगा। ज्ञान-योग तो यही है पर उस ज्ञान-योग का

हम कहाँ तक सदुपयोग करते हैं, इस पर निर्भर करता है कि हमारी मन-बुद्धि की लाइन कितनी क्लीयर है। इसलिए यहाँ ही हम अपने संस्कारों को सतोप्रधान बनायें ताकि सतयुग-त्रेतायुग के कारोबार को श्रेष्ठ रूप में कर सकें।

दादी जानकी जी अक्सर कहती हैं कि हमारे हाथों में है छोटी बात को बड़ा करना और बड़ी बात को छोटा करना। सभी भाई-बहनों छोटी बात को बड़ा करने में होशियार हैं। बात को देख मूँझ जाते हैं जिससे समय की बर्बादी होती है और बाबा की मदद नहीं मिल पाती जिससे सही समय पर सही निर्णय नहीं ले सकते।

यह बात भी दादी जी से सीखने की है कि हम छोटी बात को बड़ा ना बनायें अर्थात् राई को पहाड़ ना बनायें। हमें तो पहाड़ को राई बनाना है। यह हम पर है कि हम किस प्रकार कारोबार करते समय अपनी बुद्धि की लाइन क्लीयर रखें ताकि अव्यक्त बापदादा की टचिंग हमें मिलती रहे। हम सदा ध्यान रखें कि अपने कार्य को सफल करना हमारे ही हाथों में है और उसका फाउण्डेशन है हमारी क्लीन एवं क्लीयर बुद्धि। संकल्प विकल्प के जंगल में न फँसकर हम सबकी बुद्धि की लाइन सदा क्लीयर रहे और अव्यक्त बापदादा की प्रेरणायें मिलती रहें और हमारा कार्य सफलतापूर्वक संपन्न हो सके, इसी लक्ष्य से आज का यह लेख लिखा है। ❖



**ना किसी से ईर्ष्या,
ना किसी से होड़।
मेरी अपनी मंजिलें,
मेरी अपनी दौड़।**

खुशी के रचयिता हम स्वयं हैं

ब्रह्माकुमारी शिवानी

हमने जो मान्यता (बिलीफ सिस्टम) बना ली है उसके अनुसार हम खुशी को सारा दिन भविष्य में ढूँढ़ते रहे हैं। हम यही कहते हैं कि यह होगा तो मैं खुश हो जाऊंगी। आज हम पीछे मुड़कर देखते हैं तो यही कहते हैं कि 'विद्यार्थी जीवन सबसे अच्छा जीवन है' परन्तु जब विद्यार्थी जीवन में होते हैं तब यही कहते हैं कि जब स्कूल पढ़ाई खत्म हो जायेगी, जब कॉलेज में जाऊँगी या जब नौकरी मिल जायेगी तब मैं खुश होऊँगी। जैसे ही मैंने कहा कि जब यह होगा तब मैं खुश होऊँगी, इसका मतलब है कि मैं अभी खुश नहीं हूँ। हमारी पढ़ाई भी समाप्त हो गयी, फिर हम नौकरी में आ गये, फिर हमने सोचा, अच्छा जब मैं एक से दो यानि सहभागी हो जाऊँगी, जब मैं सम्बन्ध बना लूँगी, तब खुश हो जाऊँगी। फिर वो रिश्ता हुआ, फिर हमने कहा, जब हमारा परिवार हो जायेगा तब मैं खुश हो जाऊँगी। इसका मतलब है कि हर बार हमारी खुशी स्थगित होती गयी, अब यह कब होगी?

हम कहते हैं कि वो वाले जो दिन थे ना, बहुत अच्छे थे। मैं वर्तमान में हूँ और खुशी को जो होने वाला है या फिर जो हो गया उसमें ढूँढ़ती हूँ। अगर मैं यहाँ खड़ी होकर कह रही हूँ कि जो हो गया वह बहुत अच्छा, पर उस समय मैं कब खुश हुई थी, उस समय मैं इस सोच के साथ बैठी थी कि जब यह होगा, तब मैं खुश हो जाऊँगी। वर्तमान में रहकर हम हर पल या तो बीते हुए पल के बारे में सोच रहे होते हैं या फिर आने वाले पल के बारे में।

एक दिन आप अपने विचारों की जांच करें, आप पायेंगे कि या तो वो बीती हुई बात से संबंधित होते हैं या आने वाले समय से संबंधित होते हैं। फिर हम खुशी के लिए निर्भर हो जाते हैं कि कुछ नया होगा तब खुशी मिलेगी, इस प्रक्रिया में मेरा एक-एक पल बीतता गया, यह कहते हुए कि अगले

पल वो खुशी आने वाली है, जब कुछ ऐसा होगा तब मुझे खुशी मिलेगी। ऐसी खुशी किसी प्राप्ति पर, हम जो काम करते हैं उस पर, लोगों के व्यवहार पर, साधनों पर निर्भर है। जब हमारी किसी चीज पर निर्भरता है तो हम खुश कैसे रह सकते हैं!

भय और खुशी दोनों एक साथ नहीं रह सकते हैं। यदि हम डर में हैं तो खुश नहीं हो सकते हैं। मान लीजिए कि मेरी खुशी आप पर निर्भर है तो मैं हमेशा डर में रहूँगी कि ये ठीक है, ये मेरे से नाराज़ तो नहीं हुए, ये खुश हैं ना, ये संतुष्ट हैं ना, मैं इनको खुश रखने के लिए क्या करूँ, तो यह डर है, असुरक्षा है। जहाँ निर्भरता होगी वहाँ असुरक्षा की भावना तो होगी ही। अगर मेरी खुशी साधनों पर निर्भर है तो हम सारा दिन उनके बारे में ही सोचते रहेंगे।

इतनी मेहनत करते हुए भी हम खुश नहीं हैं तो इसका सिर्फ एक ही कारण है 'निर्भरता'। हमने अपने-आपको परिस्थितियों पर, लोगों पर, वस्तुओं पर, न मालूम किन-किन चीज़ों पर निर्भर करके रखा है। जब हम इतनी चीज़ों पर निर्भर होंगे तो खुशी.....?

एक है, जो मैं बाहर करती हूँ और एक है, जो मैं करते हुए अंदर महसूस करती हूँ। मैं आपके लिए अच्छा खाना बना रही हूँ लेकिन अंदर से डर में हूँ तो कौन-से प्रकंपन निर्मित होंगे? कोई आ रहा है, हम दस चीज़ें बना दें खाने के



लिए लेकिन अन्दर कौन-सी ऊर्जा निर्मित हुई, इसका भी ध्यान रखना है। जब अन्दर सकारात्मक ऊर्जा निर्मित होगी, तो कर्म कभी भी गलत नहीं होंगे। अभी क्या है, मैं आपके ऊपर निर्भर हूँ या मैं आपको बहुत ज्यादा खुश करने की कोशिश करती हूँ, फिर अगर आप थोड़ा-सा दुखी हो गये या आप मुझसे खुश नहीं हुए तो मैं एकदम से प्रतिक्रिया करके आपसे अलग हो जाती हूँ।

जब हम अंदर से दर्द में होते हैं, भय में होते हैं तो मुझे अच्छा बोलने के लिए, अच्छा करने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। अगर मैं शांत हूँ, स्थिर हूँ तो मेरी खुशी अपने हाथ में है। मुझे आपको खुश नहीं करना है, मुझे खुश रहना है। अगर मैं खुश रहूँगी तो मेरे प्रकंपन सही होंगे, फिर यह संभव ही नहीं है कि मेरे मुख से कोई गलत शब्द निकलेगा क्योंकि मेरे बोल, मेरे कर्म का बीज 'आत्मा' में है। ❖

बाबा के साथ का कमाल

ब्रह्माकुमारी स्नेहा, खुसरूपुर, पटना



मैं पिछले तीन वर्षों से परिवार सहित ईश्वरीय ज्ञान में हूँ और बाबा से मिलन मनाने मधुबन भी गई हूँ। लौकिक भाई-बहनों में सबसे बड़ी हूँ। जब मैं दसवीं कक्षा में थी तो समझ में नहीं आता था कि मैं अपनी पढ़ाई की दिनचर्या कैसे बनाऊँ, कौन-सा विषय,

कब पढ़ूँ, किस विषय पर ज्यादा ध्यान दूँ ताकि ज्यादा अंक आएँ। मैं काफी रोती रहती थी। जब दसवीं की परीक्षा में मात्र दो माह ही बचे थे, तब तक मेरा कोई भी विषय ठीक ढंग से पूरा नहीं हुआ था। स्कूल में शिक्षकों की बहुत कमी थी। मेरा गणित ठीक था पर कुछ प्रश्न कठिन होने के कारण मैं हल नहीं कर पाती थी। जब मैं टीचर से पूछती थी, तब 'बता दोगे-बता दोगे' कह कर बात को टालते रहते थे। शिक्षक कहते थे, समूह चर्चा करो पर सहपाठियों में से कोई भी करने के लिए तैयार नहीं होता था। मैं किसी से कुछ पूछती थी तो बताना नहीं चाहते थे, उन्हें डर लगता था कि कहीं मैं उनसे आगे न निकल जाऊँ। मैं सभी जान-पहचान वालों से भी पूछ कर थक चुकी थी पर उत्तर नहीं मिला। मैं यह सोचकर चिन्तित थी कि जो प्रश्न मुझसे हल नहीं हो रहे हैं, वे ही परीक्षा में आ गए तो? फिर मैंने सब

शिव बाबा पर छोड़ कर कहा, आप जानो बाबा, कैसा प्रश्न आएगा और कैसे हल होगा।

जोड़ लिए शिवबाबा से सर्व सम्बन्ध

जब मैं परीक्षा हॉल में गई तो मुझे पूर्ण विश्वास था, मेरे बाबा जरूर मदद करेंगे, मैं असफल नहीं हो सकती। मैंने अपने सारे उत्तर-पत्र बाबा की याद में लिखे। मुझे उम्मीद थी कि मेरा परिणाम अच्छा आएगा। जब परिणाम आया तो मैं दंग रह गई। मेरे सभी सहपाठियों के अंक कम आये पर मैं स्कूल-टॉपर हो गई। सब सोचते ही रह गए, इसके 80 प्रतिशत अंक कैसे आ गये? पर मैं समझ गई, मेरी मेहनत के साथ-साथ बापदादा का भी साथ मुझे मिला है। गणित में तो कमाल हो गयी, लगभग 90 प्रतिशत अंक आए। बाबा का तो दिल से इतना धन्यवाद है कि प्रकट करने के लिए शब्द ही नहीं मिलते। किस तरह उस ज्योतिर्बिन्दु सर्वशक्तिमान का धन्यवाद करूँ। कभी-कभी तो ऐसा होता है कि जो प्रश्न दिन में हल नहीं होते वे अमृतवेले हल हो जाते हैं जैसेकि स्वयं मेरे बाबा आकर हल करते हैं। एक ही मेरे बाबा हैं जिन्होंने मुझे पूरा-पूरा साथ दिया है। अब मैंने बाबा से ही सर्व संबंध जोड़ लिए हैं। भाइयो और बहनों, आप सब प्यार से शिव बाबा को याद करके देखो, उनसे सर्व संबंध जोड़कर देखो, बाबा आपके सारे कार्य चुटकियों में कर देंगे। ❖

मैं क्या था, क्या बन गया?

ब्रह्माकुमार गजानन, जिला कारागृह, अमरावती (महाराष्ट्र)

मेरा जन्म महाराष्ट्र में बुलढाणा जिले में खेड़गाँव में हुआ। चौथी क्लास तक पढ़ाई की फिर छोड़ दी। घर की परिस्थितियाँ नाजुक होने के कारण इधर-उधर घूमता रहा। फिर कुछ साधुओं का संग मिला। उनके साथ गाँव-गाँव घूमता रहा। गीता का अधूरा ज्ञान सीख लिया। दाढ़ी बढ़ाई, साधुओं का वेश धारण किया। पूरा ज्ञान न होने पर भी लोगों को मेरा व्याख्यान अच्छा लगता, इससे प्रसिद्धि पाने लगा। देह अभिमान बढ़ता गया। हमारे संगठन के कुछ लोगों ने गलत काम किये, उनमें मुझे भी फँसाया गया और कारागृह में कैद हो गया। इससे मेरा मनोबल टूट गया।

एक वाक्य ने बदला भाग्य

अपनी सच्चाई को सामने लाने के लिए बहुत प्रयत्न किये लेकिन असफल रहा। कारागृह में ही दुखभरा जीवन बिताता रहा। एक दिन रक्षाबंधन के पावन अवसर पर ब्रह्माकुमारीज की स्थानीय शाखा की निमित्त बहन का प्रवचन हुआ। उसमें मुझे भी बिठाया गया। बेचैन होने के कारण मैं बीच-बीच में उठता रहा। अधिकारियों ने ज़बरदस्ती बिठाया। थोड़ी देर में शिवबाबा की महिमा का गीत बजा। प्रवचन शुरू हुआ। मैं शान्त हुआ। ज्ञानयुक्त वाणी ने मेरे दिल में जगह बनाई। मैं शान्ति से एक-एक वाक्य सुनता रहा। एक वाक्य ने मेरा भाग्य ही बदल दिया। वह था, “भाग्य का सूरज तो अंधकार में ही उदय होता है फिर तुम जीवन के अंधियारों से क्यों घबराते हो?” इस बात पर मैं चिंतन करता रहा। बाद में हम सबको राखी बांधी गई, दृष्टि देकर टोली खिलाई गई।

उतार दी भगवा ड्रेस

अगले दिन से कुछ भाइयों ने सात दिन का कोर्स कराना शुरू किया। मन में कई प्रश्न उठते, उनका समाधान होता रहा। धीरे-धीरे ज्ञान में रुचि बढ़ने लगी। मेरी गलती मुझे



समझ में आने लगी। कुछ दिन बाद मैंने निश्चय किया कि इन ब्रह्माकुमार भाइयों जैसा जीवन मुझे भी जीना है। फिर साधुओं जैसा भगवा पहनावा उतार दिया। दाढ़ी और जटायें कटवा दी। शिवबाबा के पास बैठ उनसे बातें कीं, ‘बाबा, मैंने अभी तक अज्ञानवश गलतियाँ कीं, मुझे माफ कर दो।’ मुझे विश्वास हो गया कि परमात्मा के हर कार्य में कुछ ना कुछ राज समाया हुआ है। मुझसे ये गलतियाँ नहीं होतीं तो परमात्मा का सत्य परिचय कैसे मिलता।

अब पुरानी आदतों को छोड़कर साधारण ड्रेस पहनकर राजयोगी विद्यार्थी बन गया हूँ। ब्रह्माकुमारीज पाठशाला की ज़िम्मेवारी मुझ पर सौंप दी गई है और मुझे ओमशान्ति का बैज लगा दिया गया है। इससे मुझे बहुत खुशी मिली है। कारागृह में जहाँ-जहाँ जाता हूँ, अधिकारीगण के साथ-साथ अन्य भाई भी सम्मान देते हैं। ज्ञान में आने से पहले का फोटो और ज्ञान मिलने के बाद का फोटो, दोनों में फर्क देख मुझे भी आश्चर्य होता है। ज्ञान मिलने से पहले मैं कैसा था और बाबा ने मुझे क्या से क्या बना दिया है! आज अपने सुख भरे जीवन को देख मेरा दिल गा उठता है,

“उपकार तुम्हारा बाबा किन शब्दों में मैं गाऊँ,
इस दिल ने जो पाया है वो कैसे मैं समझाऊँ?”

आध्यात्मिकता और भ्रान्तियाँ

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

पिछले अंक में हमने पढ़ा कि कई लोगों में भ्रान्ति है कि जो लोग जीवन में समस्याग्रस्त होते हैं या किसी कारण से लक्ष्य प्राप्त नहीं कर पाते वे ही अध्यात्म की तरफ जाते हैं परन्तु यह सत्य नहीं है। अनुभव यह कहता है कि समस्या आने पर लोग आत्महत्या करते हैं या घर से भागते हैं या व्यसनों के अधीन होते हैं या विकारों के अधीन होते हैं। अध्यात्म का मार्ग उपरोक्त चारों बातों से भिन्न मार्ग है। सच्चा आध्यात्मिक व्यक्ति मनोबल और ईश्वरीय बल के आधार पर परिस्थितियों को पार कर नया मार्ग बनाता है। आध्यात्मिक व्यक्ति घर नहीं छोड़ता, कुटुम्बी नहीं छोड़ता, फर्ज़ नहीं छोड़ता बल्कि सारे विश्व को ही घर और कुटुम्ब बना लेता है और अपने फर्ज़ के दायरे को बढ़ा लेता है। आध्यात्मिक व्यक्ति संतुलित रूप से तरक्की करता है जिसमें शरीर और आत्मा, परमार्थ और व्यवहार – सभी का विकास होता है। यदि केवल भौतिक विकास पर ध्यान है और आत्मिक विकास (मूल्यों का विकास) उपेक्षित है तो यह एक तरफा विकास अल्पकाल की चकाचौंध के साथ ही समाप्त होने लगता है। आगे पढ़िए – सम्पादक

थका देती है एक पंख की उड़ान

पंखी को उड़ने के लिए दो पंख चाहिए, इसी प्रकार तरक्की को स्थाई और सुखदाई बनाने के लिए भी भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पंख चाहिए। जब भौतिकता थकाने, उलझाने और डुबाने लग जाए तो आध्यात्मिकता पतवार बनकर उबार ले। (पिछले अंक में दी गई) कहानी में यदि वह उन्नतिशील युवक अध्यात्म की शक्ति, राजयोग की शक्ति को धारण कर आत्मबल को बढ़ा लेता तो 500 क्या, हजारों का अगुआ बनते भी हर्षित रहता। अपने स्वभाव को मोल्ड कर पत्नी के स्वभाव को भी मोल्ड कर लेता। आनन्दित जीवन के साथ दीर्घ आयु प्राप्त करता पर एक पंख के साथ उसकी उड़ान ने उसे इतना थका दिया कि जीवन-यात्रा अधूरी ही छूट गई। यह केवल एक युवक की कहानी नहीं है। आध्यात्मिकता रूपी टांग को काटे हुए लाखों युवक-युवतियों की कहानी है। अन्तर सिर्फ इतना है कि कहानी के मोड़ सबके अपने-अपने हैं पर त्रासदी सबकी समान है।

जरूरी है सामंजस्य की शक्ति

रोग, शोक, अल्पायु, दुर्घटना, अपराध आदि के मूल

में मानव का आध्यात्मिक मूल्यों का उल्लंघन है। अतः सन्तुलित और सुखदाई तरक्की तभी सम्भव है जब हम दोनों शक्तियों को साथ लेकर चलें। अध्यात्म हमें समयानुकूल रीति से ढलना, मुड़ना, सामंजस्य बिठाना सिखाता है। जीवन में हर दिन नए व्यक्ति, नए स्थान, नए वातावरण के साथ सामंजस्य बिठाना पड़ सकता है अतः यह शक्ति अकूत रूप में अपने पास सहेज लेनी चाहिए। हमने खाती को किवाड़ लगाते देखा है। फिट नहीं बैठते तो काटता है। एक को काटा, फिर दूसरे को काटा, फिर फिट नहीं हुए। कभी ऊपर, कभी नीचे, कभी सामने से काटता रहा। एक घन्टे के बाद दोनों किवाड़ फिट हो गए, सामंजस्य हो गया। किवाड़ों की तरह दो लोगों को साथ रखने में कितनी काट-छांट की ज़रूरत है। एक कहे, यह मेरा स्वभाव है, मैं नहीं बदल सकता, तो दूसरा भी अड़ जाएगा, मैं भी नहीं बदल सकता। किवाड़ों की तरह दोनों ही ज़रूरत अनुसार काट-छांट करें, तभी सामंजस्य होगा।

मज का लचीलापन

शरीर में काफी लचीलापन प्रकृतिप्रदत्त है। हाथ-पाँव, कमर, गर्दन, घुटने आदि आवश्यकतानुसार काफी हद

तक मोड़े जा सकते हैं, आगे-पीछे किए जा सकते हैं। यदि शरीर का कोई अंग अपनी इस स्वाभाविक मुड़ने की, लचक की शक्ति खो दे तो उस अंग को बीमार समझा जाता है। इसी प्रकार मानव मन में भी परिस्थिति के अनुसार अपने को ढालने की, मोड़ देने की शक्ति है। यदि मन समयानुसार न मुड़ सके तो ऐसे मन को भी बीमार माना जाएगा। एक घर में दो बच्चे अपने-अपने कमरों में अकेले-अकेले रहते हैं। किसी कारण से दो दिन के लिए वहाँ दो बुजुर्ग मेहमान आ गए। माता-पिता ने बच्चों को कहा, बेटा, दो दिन तुम इकट्ठे अर्थात् एक ही कमरे में रह लो, एक कमरा खाली करके इन दो बुजुर्ग मेहमानों को दे दो। बच्चों का उत्तर है, 'ये आते ही क्यों हैं और आते हैं तो इन्हें होटल में ठहराओ, हम अपना कमरा नहीं देंगे।' ये कैसे लक्षण हैं? मन स्वतन्त्रता भोगते-भोगते इतना जड़ हो गया, इतना एक ढर्रे का आदी हो गया कि थोड़े-से, छोटे-से परिवर्तन के लिए भी तैयार नहीं है। कल जब जीवन में बड़ी-बड़ी परिस्थितियाँ आएंगी तब हम मन को कैसे मोड़ेंगे, कैसे अनुकूल बना पाएंगे? ऐसी जड़ और सुविधाभोगी ज़िन्दगी की कैद से अध्यात्म के सिवा कौन निकाल सकता है? रिशतों की गरिमा बनाए रखने और कर्त्तव्य की पूर्ति करने की समझ और शक्ति अध्यात्म के बिना कौन दे सकता है?

तौथी भ्रान्ति

एक भ्रान्ति यह भी है कि सभी लोग आध्यात्मिक हो जाएंगे तो दुनिया कैसे चलेगी?

दुनिया तो चलेगी पर लूट-खसूट नहीं चलेगी

आध्यात्मिक व्यक्ति दुनिया की गति में कहीं अवरोध पैदा नहीं करता, वो तो केवल विकारों की, बुराइयों की, स्वार्थों की, क्रोध और लालच की गति में अवरोध पैदा करता है। इनके बिना दुनिया तो चल सकती है पर वकालत, कचहरियाँ, जेलखाने, पागलखाने, मिलिट्री,

गोला-बारूद के धन्धे, मिलावट-बनावट के धन्धे, लूट-खसूट नहीं चल सकती। आध्यात्मिक व्यक्ति की अपवित्रता नष्ट हो जाती है फलस्वरूप दुख-दर्द और कलह-क्लेश खत्म हो जाते हैं। इससे संसार के कार्य बन्द नहीं होते, हाँ, नरक के द्वार बंद हो जाते हैं। अध्यात्म दुनिया को चलने से रोकता नहीं वरन उसके दिव्यीकरण की विधि समझाता है। वह सम्बन्धों में सदगुण भरने और स्वार्थ का त्याग कर सच्चा स्नेह भरने की युक्ति सिखाता है।

पाँचवी भ्रान्ति

एक भ्रान्ति यह भी है कि हमारे ज्ञानी और निर्विकारी बनने से कुछ लोग दुखी हो जाते हैं। जब हम ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं, मांसाहार या मद्यपान त्याग देते हैं, सिनेमा जाना बन्द कर देते हैं तो कुछ लोग रुष्ट हो जाते हैं। हम उनका भला सोचते हैं पर फिर भी वे उत्तेजित हो जाते हैं और मन-मुटाव कर लेते हैं।

इस विषय में हमें अपनी चेकिंग करनी है कि हमारे मन में उन लोगों के प्रति कोई अशुभ विचार तो नहीं है। यदि नहीं है तो हम दुख देने के निमित्त कैसे हुए? वे स्वयं ही अपने संकल्पों-विकल्पों से दुखी हैं। हमें निरन्तर उनके कल्याण का विचार करते रहना चाहिए। उनके रुष्ट भाव को देखकर हमें अपने को निर्विकार बनाने का प्रयत्न नहीं छोड़ना चाहिए, यह उनके लिए भी कल्याणकारी है। जब कोई व्यक्ति लीक से हटकर कार्य करता है तो लोगों का विरोध स्वाभाविक है। आम जनमानस तो यही सोचता है कि लीक से हटकर बड़ा काम तो कोई देवदूत, कोई फरिश्ता करेगा, यह व्यक्ति तो हमारे बीच पला-बढ़ा, हमारे जैसा ही है, तो इसे भी हमारी तरह ही जीना चाहिए। हमें उनकी इस सोच को अपने मार्ग की बाधा नहीं बनने देना चाहिए। हम अपने को निर्विकार बनाते चलें और उनका भी भला सोचते चलें। जैसे-जैसे हमारे बदलाव का रंग गहरा होता चला जाएगा, उन्हें दिखने लगेगा तो वे अपना रुख बदलने लगेंगे।

अन्तिम सवाल

उपरोक्त सारी चर्चा के बाद अन्तिम सवाल यह भी उभरकर आता है कि आध्यात्मिक ज्ञान में चलना बहुत कठिन है, इस मार्ग पर कोई विरला ही सफल हो पाता है।

अध्यात्म खुद को धोने का मार्ग है। कपड़ा, बर्तन, घर को धोने, साफ-सुथरा रखने का कार्य कितना भी मुश्किल हो, फिर भी हम करते हैं ना। तो फिर स्वयं को अर्थात् आत्मा को स्वच्छ करने की मेहनत से क्यों डरते हैं और फिर इस कार्य में हमारी मदद के लिए हमारे अतिप्रिय पिता परमात्मा भी तो हैं। उनसे सम्बन्ध जोड़ने से बहुत शक्ति मिलती है। पवित्रता, सुख, शान्ति का जन्मसिद्ध अधिकार परमात्मा पिता से सम्बन्ध जोड़ने से ही मिलता है। जिस प्रकार बूंद अपने मूल रूप में शुद्ध होती है, अशुद्धि तो बाद में आती है, इसी प्रकार आत्मा अपने मूल स्वरूप में शुद्ध है, अशुद्धि तो अपने को देह समझने से आती है। अतः चलते-फिरते यह स्मृति रखने से कि 'मैं निर्विकार आत्मा हूँ और परमात्मा की सन्तान हूँ' हमारे अन्दर की अशुद्धि मिटती जाती है और हम पूर्ण पावनता की मंजिल को पा लेते हैं। तो क्या मन को सुकून देने वाली यह स्मृति रखना, मन को उलझन में डालकर तनावग्रस्त करने वाली स्मृतियों से ज्यादा मुश्किल है? सत्य तो यह है कि अध्यात्म का मार्ग अतीन्द्रिय सुखों से भरा सरल मार्ग है। ❖

पत्नी का स्वभाव बदल गया

ब्रह्माकुमार राजकुमार, दधेड़ा (शामली)

ईश्वरीय ज्ञान में आने से पहले परमात्मा के विषय में कुछ भी पता नहीं था। घर में लड़ाई होती रहती थी। युगल कहती थी कि आप धुमिया (एक विशेष स्थान) पर दिया जलाने जाओ परन्तु मैं इन्कार कर देता था। मन्दिर में भी कम जाता था।

एक ब्रह्माकुमारी बहन हमारे गाँव में आई और मेरा एक पड़ोसी भाई (दुकानदार) ज्ञान सुनने जाने लगा। उसने मुझे भी ज्ञान सुनने का निमंत्रण दिया। मैंने कहा, मैंने राधास्वामी, निरंकारी, धन-धन सतगुरु सभी सत्संग सुन रखे हैं। उसने कहा, यह सत्संग उनसे हट कर है। यह सुनकर मैंने जाना शुरू कर दिया। तारीख 01-04-2014 को 7 दिन का कोर्स शुरू किया और ज्ञान समझ में आने लगा। परमात्मा शिव बाबा की पहचान हुई और योग करना शुरू किया। बाबा ने मुरली में कहा, अमृतवेले योग करना जरूरी है। मैं अमृतवेले 30 या 40 मिनट योग जरूर करता हूँ।

पत्नी के स्वभाव में परिवर्तन और व्यापार में सहयोग

मैंने बचपन से आज तक कभी भी बीड़ी-सिगरेट का सेवन नहीं किया लेकिन शादी के बाद पत्नी बीड़ी पीने वाली आ गई। मुझे बीड़ी पीने वालों से दुर्गन्ध आती है। जैसे ही मैं बाबा को याद करने बैठता वह बीड़ी पीने लगती। मैं बड़ा परेशान रहता। मैंने बहन जी को बताया, बहन जी ने कहा, यह पूर्व जन्मों का हिसाब-किताब है, शुभ भावना रखने से समाप्त होता जाएगा। मैं अमृतवेले योग करते समय उससे क्षमा माँगता कि मेरी पूर्व में की गई गलतियों को क्षमा करो और बाबा को कहता कि यह आपकी पक्की बच्ची बन जाये। एक दिन अचानक वह भी कहने लगी कि जहाँ आप जाते हो, मैं भी चलूँगी। फिर उसको भी बाबा का ज्ञान अच्छा लगने लगा, अब वह भी बाबा की पक्की बच्ची बन चुकी है, धूम्रपान छोड़ चुकी है। जब से बाबा के बने हैं तब से मेरा व्यापार दिन दौगुनी रात चौगुनी उन्नति करता ही जा रहा है।

मुझे एक बीमारी हुई थी उसका ऑपरेशन भी कराया था लेकिन खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही थी। मैंने उसे बाबा को सौंप दिया और हर रोज अमृतवेले स्वमान में रहकर शरीर को सकाश देता कि यह बीमारी ठीक हो रही है। कुछ महीनों बाद ही वर्षों की बीमारी जड़ से खत्म हो गई। वाह! मेरे मीठे बाबा वाह! डॉक्टर बनकर बीमारी को ठीक कर दिया। धन्यवाद बाबा।

मिल गये बाबा चैनल बदलते-बदलते

ब्रह्माकुमार विक्रम सिंह पाल, नरौरा, कासगंज (उ.प्र.)

बात उन दिनों की है जब मैं ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ता था। पूरी कक्षा चार सदन में बँटी हुई थी तथा हर सुबह प्रार्थना के वक्त हर सदन में से किसी एक विद्यार्थी को 15 मिनट नैतिक शिक्षा पर अपने विचार रखने होते थे। मैं काफी दिनों तक बचता रहा परन्तु एक दिन मेरा नम्बर लग गया, तब तक मैं तैयार हो चुका था। किस विषय पर बोलना है और उसका शीर्षक क्या होगा, यह भी निश्चित कर लिया था। उस वक्त मैंने अपनी कल्पना को कुसंगति के कुपरिणामों से जोड़ा था, शीर्षक रखा था “किस्सा नीलम के बादलों का।”

नीलम के बादल

नीलम के बादल अर्थात् बहुत सुन्दर श्वेत वर्ण के बादल। आसमान में जब बादल आने शुरू होते हैं तो पहले वे बिल्कुल श्वेत वर्ण के होते हैं, तब पूरा आसमान खूबसूरत लगता है। एक-दूसरे से अठखेलियाँ करते वक्त भी ये बादल बहुत सुन्दर लगते हैं। फिर धीरे-धीरे उन श्वेत वर्ण के बादलों में से कोई एक थोड़ा-सा काला हो जाता है और फिर वो काले रंग का बादल सबको अपने आगोश में लेने लगता है। फिर एक वक्त ऐसा आता है कि सारे श्वेत बादलों का रंग पूर्णतया काला हो जाता है। फिर सभी मिलकर भयंकर गर्जना करने लगते हैं। शायद अपने आतंक से सभी को डराना चाहते हैं और अन्त में इतने जोर से बरसते हैं कि लगता है, आज ये सब कुछ खत्म कर देंगे। बाद में आसमान पुनः स्वच्छ हो जाता है और नीलम के बादलों का खेल पुनः प्रारम्भ हो जाता है। शिवबाबा प्रदत्त सृष्टि चक्र का ज्ञान भी तो ऐसा ही है। पहले हम बहुत श्वेत रंग के होते हैं फिर धीरे-धीरे माया हमें अपने रंग में रंगने लगती है। अन्त में महापरिवर्तन होता है जिसके बाद श्वेत वर्ण के नीलम के बादलों की तरह हम भी पुनः श्वेत

बन जाते हैं। इस अन्तिम जन्म में मैं कैसे श्वेतवर्ण की ओर अग्रसर हुआ, वह घटना आपको सुनाता हूँ –

समायोजन में परेशानी

मैं अपने परिवार से खुश था, दो प्यारी बच्चियाँ हैं, अच्छी पत्नी है। नौकरी भी ठीक-ठाक है परन्तु कमी थी तो सन्तुष्टता की। पेशे से बैंकर हूँ इसलिए कार्य का दबाव रहता था। कभी-कभी बहुत ज्यादा मानसिक तनाव होता था तो उसे या तो शराब पीकर या सिनेमा देखकर दूर करता था। कैरियर की शुरूआत मुम्बई शहर से हुई, बनावटी बातें करना और बनावटी तरीके से ग्राहकों से मिलना अच्छा लगता था। मुझे सब वैसा ही मिला जैसा मैं चाहता था। दिक्कत तब आनी शुरू हुई जब मेरा तबादला उत्तर प्रदेश के एक छोटे से कस्बे में हो गया। अब तो सब कुछ अनमना-सा लगने लगा क्योंकि अब मुझे अनपढ़ लोगों को डील करना पड़ता था, बहुत परेशान था। सब कुछ विपरीत होने लगा। शहरी चकाचौंध की आदत के कारण समायोजन नहीं कर पा रहा था।

जीवन के राज जान गया

अचानक एक दिन टी.वी. देखते, चैनल बदलते-बदलते सुरेश ओबेराय जी दिखाई पड़े। मन में प्रश्न उठा कि ये इस संस्कार चैनल पर क्या कर रहे हैं? उत्सुकता बढ़ी और कार्यक्रम देखने लगा। सुरेश ओबेराय जी के साथ सफेद कपड़ों में एक बहन बैठी हुई थी, उन्हें देखते ही ब्रह्माकुमारी संस्था के बारे में जो थोड़ा-बहुत सुना था वह



याद आ गया। सुरेश ओबेराय जी और वे (शिवानी बहन) 'हैप्पीनेस अनलिमिटेड' टॉपिक पर वार्तालाप कर रहे थे। मुझे अच्छा लगा, ऐसा लगा कि ये वही चर्चा कर रहे हैं जो मेरे साथ हो रहा है। फिर तो हर रात 10 बजने का इन्तज़ार करने लगा। मेरी रुचि देख मेरे पड़ोसी ने, जो आश्रम जाते हैं, मुझे एक पुस्तिका पकड़ा दी जिसमें पहला ही पाठ आत्मा का था। दो-चार लाइनें पढ़ने के बाद मैंने उन्हें वह पुस्तक लौटा दी कि भाई मुझे आत्मा-वात्मा के फेरे में नहीं पड़ना परन्तु 10 बजे वाला कार्यक्रम देखना नहीं छोड़ा। बाद में मन में यह सवाल उठा कि ये बहन जो बताती हैं, इन्होंने भी तो कहीं से सीखा होगा। फिर क्या था, मैं भी सेवाकेन्द्र पहुँच गया। सेवाकेन्द्र पर बहन जी ने मेरा कोर्स शुरू किया। कोर्स खत्म होते-होते जीवन के बहुत सारे राजों का पता लगने लगा और अब यह आलम है कि शिवबाबा के अलावा कुछ समझ में ही नहीं आता है। माया का वार बहुत होता है परन्तु बाबा ऐसी शक्ति देते हैं जो सब परीक्षाएँ पास कर लेता हूँ। अब तो प्यारे बाबा के लिए दिल से निकलता है –

यह सात गुणों से बनी आत्मा तेरे नाम,
हर गुण में है रंग खनकता तेरे नाम,
बिन तेरे जो उम्र बिताई बीत गयी,
बची उम्र का बाकी हिस्सा तेरे नाम।।

बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ

ब्रह्माकुमारी शकुन्तला, बहल (हरियाणा)

बेटी के जन्म पर बहनो आँसू कभी बहाना ना
बेटी तो हीरा-मोती है उसको कब तुकराना ना
'धन पराया' बेशक बेटी 'खून तो अपना' होती है
जिसके घर में बेटी जन्मे धन की वर्षा होती है

'बेटी बचाओ – बेटी पढ़ाओ' अपने दिल पर लिख डालो
कन्या-हत्या के कलंक को माथे से अब धो डालो
गंगा, गीता, गरु, गायत्री सबकी पूजा करते हो
कन्या भी तो पूजनीय है उसका क्यों वध करते हो?

बेटी की हत्या करवाकर, पुत्र रत्न जो पायेगा
ऐसा बेटा उस माता को कभी न सुख दे पायेगा
आओ बहनो करें प्रतिज्ञा, ऐसे पाप से बचना है
ममता को ना दाग लगायें, कान खोल कर सुनना है

बेटी के दहेज में तुम कार बेशक मत देना
लेकिन अपनी बेटी को संस्कार अच्छे दे देना
कार तो भाई कार है, एक दिन बेकार हो जायेगी
अच्छे संस्कारों की बेटी जग में नाम कमायेगी

'पुत्र' संपादक के नाम

जून, 2015 के अंक में सहज राजयोग को जितना सहज तरीके से परिभाषित किया जा सकता है, सम्पादकीय लेख में 'गाड़ी के 4 गियरों' के माध्यम से बखूबी किया गया है और चित्रांकन के साथ-साथ व्याख्याकार की अनमोल शैली द्वारा समझाया गया है। लेख 'सहज राजयोग' में योग-आसन व सहज राजयोग की विश्लेषणात्मक व्याख्या कर सुस्पष्ट कर दिया कि इंसान तन से इतना दुखी नहीं जितना मन से है। संकल्पों द्वारा आत्मा का संबंध परमात्मा से जुड़ता है, ध्यान को संसार से हटाकर परमात्मा में लगाना ही योग है, परमात्मा पिता हैं, हम उनके पुत्र हैं और योगाभ्यास के लिए जरूरी है शरीर रूपी रबड़ को भूलना।

– ब.कु.शम्भुप्रसाद शर्मा, जयपुर (सोडाला)

बिना शर्त बाँटें खुशियाँ

ब्रह्माकुमार दिवाकर कुमार श्रीवास्तव, कानपुर

जीवन जीने के लिए खुशी एक आवश्यक गुण है जिसके लिए अब तक बहुत-सी किताबें लिखी जा चुकी हैं, बहुत-से शोध भी हुए हैं पर एक ओर इसकी आवश्यकता बढ़ती जा रही है और दूसरी ओर यह मानव जीवन से घटती जा रही है। आत्मा के इस अनमोल खजाने को बचाने की ज़रूरत है। जैसे-जैसे हम आधुनिकता के दौर में आगे बढ़ रहे हैं, यंत्रों के साथ हमारा सम्बन्ध तेज़ी से बढ़ता जा रहा है और मानव से सम्बन्ध घटता जा रहा है। हमें अंतरात्मा में झाँककर सम्बन्धों को मजबूत करना पड़ेगा, इसके लिए थोड़े स्नेह, थोड़े आदर की ज़रूरत है। सम्बन्ध ताजमहल की तरह होते हैं जिनकी खूबसूरती तो हर किसी को नज़र आती है पर उन्हें बनाने में लगा वक्त नज़र नहीं आता। हमें भौतिक वस्तुओं का इस्तेमाल अवश्य करना है पर दीपक और बाती की तरह जिससे कि भौतिक जीवन और मानवीय सम्बन्धों के बीच संतुलन बना रहे।

खुशी का सृजन होता है विचारों से

जिस खुशी को हम पद में, प्रतिष्ठा में, सम्बन्धों में ढूँढ़ते रहते हैं उसका सृजन हमारे विचारों से होता है। अभी के समय में नेत्रदान, रक्तदान, अंगदान बहुत ही जागृति के साथ व्यापक पैमाने पर चल रहे हैं। यह मानव का, मानव जीवन के लिए अमूल्य योगदान है। इसके साथ-साथ अब खुशी के दान की ज़रूरत महसूस की जा रही है। हम सभी जानते हैं कि खुशी ही सफलता की कुंजी है। बच्चे हों, महिलाएँ हों, बड़े हों, पेड़-पौधे, जीव-जन्तु हों या निर्जीव वस्तुएँ हों, सभी को खुशी की अत्यंत आवश्यकता है। हम सभी हँसना, खुश रहना चाहते तो हैं पर हमारी आदत बनी हुई है कि हम कुछ पाने, कुछ बनने, कुछ होने पर ही खुश होते हैं, ऐसी खुशी क्षणिक होती है क्योंकि प्राप्ति के समाप्त होते ही हम पुनः पहले वाली स्थिति में चले आते हैं।

खुशी को समझ लिया सिलेबस से बाहर का सवाल

आज तक जितने भी बड़े-बड़े काम हुए वे खुशहाल माहौल में ही संभव हो पाये। खुशी से हमें शक्ति और हिम्मत बोनस में मिल जाते हैं, जो जिंदगी में उत्प्रेरक की तरह कार्य करते हैं। हमें बचपन से कई शिक्षाएँ दी जाती हैं जैसे कि क्या खाना है, कब सोना है, क्या पढ़ना है, क्या बोलना है, क्या पहनना है, क्या बनना है, क्या खरीदना है आदि-आदि पर कोई नहीं सिखाता कि खुशी को कैसे पाना है और कैसे बरकरार रखना है। जैसे ही हमारी खुशी का सूचकांक ऊपर-नीचे होता है, जिंदगी भी उसी तरह ऊपर-नीचे हो जाती है। हमने जिंदगी जीने के लिए बहुत सारी तैयारियाँ की पर खुशी को सिलेबस से बाहर का सवाल समझ उपेक्षित कर दिया। अब जिंदगी में इसे भी समझने की ज़रूरत है। इसके लिए एक-दूसरे का सहयोग करने की ज़रूरत है। जहाँ खुशी है, वहाँ प्रेम है, जहाँ प्रेम है वहाँ सफलता और लक्ष्मी सदैव विराजमान रहते हैं।

खुशी है सबसे बड़ी दवा

इस अनमोल चीज को न तो हम खरीद सकते हैं और न बेच सकते हैं पर एक-दूसरे को दे ज़रूर सकते हैं। देना तभी संभव है जब हम खुद खुश रहेंगे। खुशी सबसे बड़ी दवा है, सारी समस्याओं का समाधान इसी से मिलता है और इसकी कमी से ही सारी समस्याओं की शुरुआत होती है। खुशी केवल हम तक सीमित नहीं रहती बल्कि हमारे चारों तरफ इसका आभामंडल सृजित होता है जिससे जाने-अनजाने हमारे द्वारा दूसरों की बहुत बड़ी सेवा हो जाती है, मानवीय सम्बन्धों में मधुरता का विस्तार होता है। परिवार में, समाज में, व्यापार में सभी जगह सकारात्मक सहयोग मिलना शुरू हो जाता है, जीवन में सृजनात्मक शक्तियों का विकास होने लगता है।

हमें ध्यान रखना है कि हम बिना शर्त खुशियाँ बाँटें, जितनी बाँटेंगे, उतनी बढ़ेंगी। बाँटने के लिए हमें ज्यादा से ज्यादा लोगों से संपर्क में रहना पड़ेगा क्योंकि खुश अकेले नहीं हुआ जा सकता है, मगर फास्ट फूड के ज़माने में आज हम खुशी को भी अकेले खाने में लगे हैं। सूर्य का प्रकाश, चाँद की शीतलता, पृथ्वी की सहनशीलता, आकाश की विशालता, अग्नि की ऊर्जा और जल की निर्मलता हमें बार-बार याद दिलाते हैं कि अपनी खुशियाँ बाँटते जाओ,

वे बढ़ती जाएँगी। आइए हम संकल्प लें कि हम जहाँ भी रहेंगे, ईश्वर के इस अनुपम खजाने को अपने में भरते रहेंगे और बाँटते रहेंगे समाज के लिए, संसार के लिए ताकि यह धरती हर एक को स्वर्ग-सी प्रतीत हो।

मुसकराते रहें आप हजारों के बीच में
जैसे एक गुलाब हो बहारों के बीच में
जिंदगी की सारी खुशियाँ हों आपके नसीब में
जैसे एक चाँद हो सितारों के बीच में।

तू मेरा ध्यान कर, तेरा ध्यान मैं रखूँगा

ब्रह्माकुमार संदीप, बहादुरगढ़

सितम्बर, 2013 में भारतवर्ष की युवा शक्ति को जागरूक करने के लिए 'स्वर्णिम भारत के लिए – शान्तिदूत युवा साइकिल यात्रा' का आयोजन किया गया। इस आयोजन में साइकिल यात्रियों का एक दस्ता दिल्ली (पाण्डव भवन) से सांपला (हरियाणा) के लिए रवाना हुआ। गाँवों, कस्बों में युवा जागृति के खूब कार्यक्रम हुए।

महाकाल ने बताया काल से

एक गाँव से जब यह यात्रा गुजर रही थी तो गीतों की आवाज सुनकर एक भैंसा बहुत आवेश में आ गया और काल की भाँति बिना रोके हमारी तरफ आने लगा। उस समय मैं महाकाल (शिव) की स्मृति में साइकिल चला रहा था कि अचानक भैंसा साइकिल से टकरा गया। टक्कर इतनी तेज थी कि साइकिल का पिछला टायर बुरी तरह मुड़ गया। साइकिल के पीछे पानी की बोतल रखी थी, जब वह फूटी और पानी की बूंदें मुझ पर पड़ी तो उस क्षण लगा कि काल का बुलावा आ गया है परन्तु जो महाकाल (शिव) की स्मृति में समाया हो उसे तो काल भी छू नहीं सकता। महाकाल शिव परमात्मा ने मुझे काल

के पंजे से छुड़ा लिया। मैं एकदम ठीक था और मामूली-सी भी चोट नहीं लगी थी। इसके बाद बिना विचलित हुए साइकिल को ठीक करवाकर गंतव्य की ओर प्रस्थान किया।

कवच बनकर की रक्षा

आगे चलकर सांपला गाँव में एक सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया जिसमें मंच संचालन का कार्यभार मुझ पर था। सब कुछ परमात्म स्मृति में ठीक-ठाक चल रहा था। जो भाई कार्यक्रम की वीडियो बना रहा था उसने मंच की तरफ कैमरे का फोकस किया और अचानक कैमरे के पास लगी फोकस लाइट चटक (फूट) कर मेरे ऊपर आ गिरी। परमात्म स्मृति की लहर में, बिना अवस्था को डगमगाए मैंने उसे अपने ऊपर से हटा दिया। फोकस लाइट का वह टुकड़ा सामने रखी कॉपी (Note book) पर गिर गया। गिरते ही कॉपी का पेज जल गया। ऐसा लग रहा था कि कोई कवच बनकर रक्षा कर रहा है। दिल से बारंबार उस परमात्मा का शुक्रिया निकल रहा था और परमात्मा के महावाक्य याद आ रहे थे, 'तू मेरा ध्यान कर, तेरा ध्यान मैं रखूँगा।' ❖

पुत्र बना गुरु

ब्रह्माकुमार शोभाराम सिंह बैस, देवीपुर, सतना (म.प्र.)

मेरे पिताजी किसान थे। मैं मैट्रिक तक पढ़कर खेती में पिताजी की सहायता करने लगा। शादी के बाद पिताजी ने मेरा हिस्सा बांट कर मुझे अलग कर दिया। एक दिन मैंने जोताई, बोवाई, कटाई आदि का हिसाब लगाया तो पाया कि खेतों में जितनी मेहनत करता हूँ उतनी आमदनी नहीं होती है इसलिए खेती की भूमि को बँटाई में देकर सतना कचहरी में टाइपिंग का कार्य करने लगा।

नौ प्रकार की भक्ति

बचपन से ही धार्मिक प्रवृत्ति का था और बुजुर्गों द्वारा सुनता था कि जब तक गुरुमंत्र नहीं लेते तब तक किए हुए सत्कर्मों का फल नहीं मिलता। इसलिए जब गृहस्थ व्यवहार में आया तब पत्नी सहित लौकिक गुरु से मंत्र लिया। भक्ति मार्ग में श्रीराम को भगवान मानता रहा। प्रवृत्ति मार्ग वालों के लिए श्रीराम ने अपनी भक्ति नौ प्रकार की बतायी है। रामायण में लिखा है, 1. श्रवण 2. कीर्तन 3. स्मरण 4. पादसेवन 5. अर्चन 6. वंदन 7. दास्य 8. सख्य 9. आत्मनिवेदन – इन नौ प्रकार की भक्ति के द्वारा मेरी प्राप्ति होती है। जिसके मन में मेरी लीलाओं के प्रति बहुत प्रेम होता है, मुझे ही गुरु, माता, पिता, सखा, पति और देवता सब कुछ जानकर दृढ़ता से मेरी सेवा में लगा रहता है, मेरे गुण गाते हुए पुलकित हो जाता है, वाणी प्रेम में गद्गद् हो जाती है, आँखों से प्रेम के आँसू बहने लगते हैं, ऐसे निष्काम और निष्कपट भक्त योगी के वश में मैं सदा रहता हूँ। मैं यथासम्भव सभी प्रकार की भक्ति करता था।

चित्रकूट में नहीं मिले भगवान

रामायण में लिखा है, जो मनुष्य चित्रकूट में कामदगिरि के दर्शन करता है उसके सभी दुख दूर हो जाते हैं। मैं हर माह की अमावस्या को चित्रकूट जाता, कामदगिरि की परिक्रमा करता और यही वरदान माँगता कि मुझे इसी



शोभाराम सिंह अपने पुत्र के साथ

जन्म में भगवान मिलें। चित्रकूट में जिस स्थान पर रात रुकता था वहाँ कई प्रश्न लिखे थे जैसे कि मैं कौन हूँ, कहाँ से आया हूँ और अंत में कहाँ जाना है? मैं क्या कर रहा हूँ और इसका क्या परिणाम होगा? जो वस्तु मेरे साथ जाएगी वह मैं इकट्ठी कर रहा हूँ या नहीं? मेरा घर कहाँ है, मैं यहाँ क्यों आया हूँ, अब मैं अपने घर कैसे जाऊँगा? मैं अपने आपको, अपने बाप को, अपने घर को कैसे भूल गया आदि-आदि। मैंने इन प्रश्नों के बारे में कई साधु-संतों और लोगों से पूछा लेकिन किसी ने सन्तोषजनक उत्तर नहीं दिये। कई वर्षों तक चित्रकूट जाता रहा लेकिन भगवान नहीं मिले। ज्ञानमार्ग में आने के बाद ही मुझे मेरे सभी प्रश्नों के सन्तोषजनक उत्तर मिले।

अयोध्या में नहीं मिले भगवान

रामनवमी के दिन श्रीराम-जन्मभूमि अयोध्या कई बार गया। उस दिन व्रत करता और रात में जागरण भी करता कि शायद भगवान जन्म लेने के बाद मुझे दर्शन देवें लेकिन भगवान अयोध्या में भी नहीं मिले। मेरे गांव में एक देवी की मूर्ति है जिससे गांव का नाम देवीपुर पड़ा। मैं उस मूर्ति को प्रतिदिन स्नान कराता था चाहे कोई भी ऋतु हो और यही वरदान माँगता था कि हे माँ, इसी जन्म में भगवान के दर्शन हों। कई वर्षों तक देवी जी की सेवा करते रहने पर भी

भगवान नहीं मिले। घर में भी पूजा-पाठ का एक कमरा बनाया था जिसमें श्री शंकर जी की, श्री राम जी की तथा श्री हनुमान जी की पूजा करता था। श्री राम की प्रसन्नता के लिए रोज रामायण का पाठ करता था।

प्रयाग में नहीं मिले भगवान

कई बार माघ माह में मकर संक्रान्ति को तीर्थपति प्रयाग (इलाहाबाद) गया और त्रिवेणी में स्नान किया। रामायण में लिखा है –

माघ मकर गति रवि जब होई।
तीरथ पतिहिं आव सब कोई।।
देव दनुज किन्नर नर श्रेणी।
सादर भज्जहिं सकल त्रिवेणी।

वहाँ भिन्न-भिन्न स्थानों पर गीता, रामायण, महाभारत आदि के प्रवचन होते और रात में भगवान की लीलाएँ होतीं जिनमें मैं शामिल होता, जागरण करता, इसी आश से कि शायद भगवान मुझे मिलें लेकिन भगवान प्रयाग में भी नहीं मिले। भक्ति मार्ग में एक गीत गाया जाता है कि यदि प्रभु का नाम दयानिधि है तो दया करेंगे कभी ना कभी। इसी विश्वास से मैं भगवान की भक्ति करता रहा।

शिव की पूजा

मेरे पिता जी हर वर्ष आषाढ़ माह में पंडितों से शिव की पूजा कराते थे। मैंने उनसे एक बार प्रश्न पूछा कि जब भगवान श्री राम हैं तो आप शिव की पूजा क्यों कराते हैं? उन्होंने बताया कि शिव सब देवों से बड़े हैं, महान हैं, हमारे पूर्वज भी शिव की पूजा कराते थे इसलिए मैं भी शिव की पूजा कराता हूँ। पिता जी द्वारा अलग किए जाने पर मैं भी पंडितों से शिव की पूजा कराने लगा, शिवरात्रि पर व्रत करने लगा और उनसे यही वरदान माँगता कि मुझे इसी जन्म में भगवान मिलें, उनके दर्शन हों। लेकिन जब मैं ज्ञान मार्ग में आया तब मुझे पता चला कि साकार राम के भी ईश्वर (रामेश्वर) निराकार राम हैं जिन्हें हम शिवबाबा कहते हैं। रामायण में श्रीराम (देहधारी) से कहलवाया गया है,

लिंग थापि विधिवत् करि पूजा।

शिव समान प्रिय मोहि न दूजा।।

भावार्थ है कि श्रीराम को शिव के समान अन्य कोई प्रिय नहीं है।

पुत्र के माध्यम से ज्ञान की प्राप्ति

मेरे पुत्र की डॉक्टर बनने की इच्छा थी, मेरी भी यही इच्छा थी। मैंने उसे हर सम्भव योगदान दिया। अप्रैल 1990 में उसका रीवा मेडिकल कालेज में एम.बी.बी.एस. प्रथम वर्ष में दाखिला हो गया। सन् 1996 में वह एम.बी.बी.एस.का प्रमाणपत्र लेकर घर आया। रीवा में पढ़ाई करते-करते उसे ईश्वरीय ज्ञान मिला और वह इसे जीवन में उतारने लगा। जून, 1996 में उसकी पहली पोस्टिंग गुजरात के पाटन जिले में अबियाना प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र में स्वास्थ्य अधिकारी के पद पर हुई। वर्ष 1997 में मैं उससे मिलने के लिए गुजरात गया और उसके पास कई दिनों तक रुका रहा। एक दिन उसके क्वार्टर में ज्ञानामृत पत्रिका देखी, पढ़ी, बहुत अच्छी लगी। मैंने पूछा, यह पत्रिका कहाँ से लाए हो? उसने बताया, यह हमारी संस्था से निकलती है। मैंने कहा, यह तो बहुत अच्छी है। वह मुझे नजदीकी राधनपुर सेवाकेन्द्र ले गया और प्रभारी बहन ने मुझे साप्ताहिक कोर्स कराया। कोर्स करने के बाद मैं अपने गाँव देवीपुर वापस आ गया और वहाँ के बताए हुए नियमों का पालन करता रहा। वर्ष 1998 में मेरी युगल उससे मिलने गई और साप्ताहिक कोर्स करके लौटी। फिर वह भी घर में रहते ईश्वरीय नियमों का पालन करने लगी। इस प्रकार हम दोनों को पुत्र के माध्यम से ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति हुई। वही हमारा निमित्त गुरु बना।

भगवान से मिलन

दिसम्बर, 1999 में मैं पहली बार भगवान से मिलने आबू पहुँचा। उनसे मिलकर मुझे बहुत खुशी हुई। दादी हृदयमोहिनी के तन में अवतरित भगवान स्टेज से उतरकर अपने रूहानी बच्चों से मिलते हुए हमारी लाइन के पास

आए और मुझे दृष्टि व वरदान दिए। फिर वे दूसरे बच्चों से मिलने के लिए आगे चले गए। उस समय भगवान हरेक बच्चे के पास जाकर मिलते थे और दृष्टि व वरदान देते थे। भगवान सभी बच्चों से मिलकर स्टेज पर बैठ गए और महावाक्य (मुरली) उच्चारण करना शुरू किया। मैं उनके महावाक्य ध्यानपूर्वक सुनता रहा। फिर रात 12 बजे वे पुरानी शताब्दी की विदाई कर, नई शताब्दी का शुभारंभ कर परमधाम चले गए। कहा गया है, सच्चे दिल पर साहेब राजी अर्थात् भगवान सच्चे प्रेम से प्रसन्न होते हैं। भगवान से मेरा सच्चा प्रेम था इसलिए भगवान मुझे मिले। मैं भक्ति मार्ग में इधर-उधर भटका, दर-दर धक्के खाये लेकिन वे नहीं मिले। ज्ञानमार्ग में भगवान मुझे सहज ही मिल गए। मैं जितने दिन मधुबन में रहा, भगवान की लगन (प्रेम) में इतना मगन रहा कि याद ही नहीं रहता था कि आज कौन-सा दिन व तिथि है। मैं अपना घर, बाल-बच्चे, गाँव, मित्र-सम्बन्धी आदि सब भूल गया। भगवान के प्रेम में मुझे कोई भी याद नहीं आता था। आबू तीर्थ की व्यवस्था देखकर मुझे ऐसा लगा कि यह कार्य स्वयं भगवान का है, किसी मनुष्य मात्र का नहीं। यहाँ भगवान अपने निमित्त बच्चों से कार्य करा रहे हैं। इसके बाद 31 दिसम्बर, 2000 को युगल सहित भगवान से मिले। मैं अपने पुत्र के यहाँ से पुरानी ज्ञानामृत ले आता था और घर में पढ़ता था। फिर उसका आजीवन सदस्य बन गया। मैं जहाँ कहीं भी जाता हूँ, अपने साथ एक ज्ञानामृत जरूर रखता हूँ जो कि मुझे शिवबाबा की सहज याद दिलाती रहती है।

बड़ा जलाशय पाकर

छोटे जलाशय की जरूरत नहीं

जब से मैं भगवान से मिला तब से पूजा-पाठ, व्रत करना छोड़ दिया। गीता में लिखा है,

यावानर्थ उदपाने सर्वतः सम्प्लुतोदके।

तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः॥

अर्थात् जैसे बड़े जलाशय के प्राप्त हो जाने पर जल के

लिए छोटे जलाशयों की आवश्यकता नहीं रहती वैसे भगवान की प्राप्ति हो जाने पर मनुष्य को वेदों के पढ़ने की (व जप-व्रत, पूजा-पाठ आदि करने की) आवश्यकता नहीं रहती।

पुत्रवती की परिभाषा

वे पुत्र-पुत्री धन्य हैं जो अपने माता-पिता को भगवान से मिलाते हैं। इससे वे माता-पिता के ऋण से मुक्त हो जाते हैं। बच्चे की प्रथम गुरु उसकी माता होती है। वह अपने बच्चे के जीवन को चाहे तो अच्छे संस्कार देकर महान बना दे और चाहे तो बुरे संस्कार देकर बिगाड़ दे। आज विश्व में मदालसा जैसी माता की आवश्यकता है जिसने अपने सभी पुत्रों को ज्ञान देकर भगवान की भक्ति में लगा दिया। इसी प्रकार सुनीति ने अपने पुत्र ध्रुव को भक्ति में लगाया। विश्व में ऐसी और भी कई माताएँ हो चुकी हैं। जो नारी अपने पुत्र को भगवान की भक्ति में लगाती है उसी नारी को देवी या पुत्रवती कहते हैं। रामायण में लिखा है,

पुत्रवती युवती जग सोई।

रघुपति भगत जासु सुत होई॥

नतरु बाँझ भलि वादि वियानी।

राम विमुख सुत ते हित जानी॥

भावार्थ है कि इस संसार में वही नारी पुत्रवती है जिसका पुत्र भगवान का भक्त हो, भगवान का मददगार या सेवक हो, नहीं तो भगवान के विमुख पुत्र पैदा करने की बजाय उस नारी का बाँझ रहना ही अच्छा है। भगवान के विमुख पुत्र पैदा करना ऐसा ही है जैसे पशु बच्चे को जन्म देता है, पशु पैदा होने के बाद अपनी माता का कोई हित नहीं करता। ❖

समय, सेहत और संबंध – इन तीनों पर
कीमत का लेबल नहीं लगा होता है
लेकिन जब हम इन्हें खो देते हैं तब इनकी
कीमत का अहसास होता है।

मानव जीवन में धन की उपयोगिता

ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

वर्तमान समय मनुष्यों में धार्मिक उन्माद और आर्थिक धनमाद दोनों देखने को मिलते हैं। ईश्वर की स्मृति उनके लिये मनहर (मन हरने वाली) है तो धन की स्मृति उनके मन को धनहर (धन-आसक्त) बनाती है। आम व्यक्ति के चित्त में धन की इच्छा आजीवन बनी रहती है, जो उसे भक्ति में याचक बनाए रखती है और अंत समय में ईश्वरीय स्मृति की परीक्षा में असफल करा देती है। धन का सान्निध्य उसे ईश्वर के सान्निध्य से ज्यादा सुख देता है। जहां धनाकर्षण है वहां ईश्वरीय-आकर्षण कैसे हो सकता है ? मनुष्य कनिष्ठ हो या वरिष्ठ, वह धनिष्ठ (बहुत बड़ा धनी) भी होना चाहता है। धन के कारण जितनी बुराइयां पैदा होती हैं उतनी किसी और कारण से नहीं। चोरी, डकैती, हिंसा, झूठ, घमण्ड, मतभेद, जुआ, शराब, वैर, अविश्वास, लम्पटता आदि अनेक बुराइयों का कारण है धन-आसक्ति। धन की आकांक्षा ही तीसरे विकार लोभ को जन्म देती है। काम की वृत्ति समय-समय पर उठती है, क्रोध का ज्वार कुछ मिनटों का होता है परन्तु लोभ की वृत्ति तो निरन्तर बनी रहती है हालांकि इसका प्रवाह चेहरे से नहीं दिखता। लोभ का प्रभाव बेईमानी के रूप में सामने आता है। काम यदि दावाग्नि (Forest Fire) है और क्रोध भीषण ज्वालामुखी है, तो लोभ है विश्वव्यापी ताप-वृद्धि (Global Warming) की तरह, जो निरन्तर बढ़ता जा रहा है। लोभ-वार्मिंग (भ्रष्टाचार, रिश्वत, काला-धन इत्यादि) ने भी आज अधिकतर देशों की अर्थव्यवस्था को चौपट कर दिया है। मोह किसी बाह्य चैतन्य प्राणी के प्रति होता है परन्तु धन का लोभ तो जड़ पदार्थों के प्रति होता है जो चित्त में जड़ता लाता है। धन की मिठास चीनी की मिठास के समान है, जो लोभ रूपी मधुमेह (Diabetes) की बीमारी लगा देती है। मधुमेह

मात्र शरीर का ही नहीं होता बल्कि लोभ के रूप में आत्मा का भी होता है। शारीरिक मधुमेह का इलाज चलता रहता है परन्तु रूहानी चिकित्सक के अभाव में आत्मिक मधुमेह लाइलाज हो गया था, शुक्र है कि अब स्वयं परमपिता शिव इसकी रूहानी चिकित्सा कर रहे हैं।

दो प्रकार का धन

धन क्या है? धन एक ऐसा साधन है जो किसी प्राणी के जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति में मददगार बनता है। धन दो प्रकार का होता है, स्थूल (जड़) और सूक्ष्म (चैतन्य गुण-धर्म)। पहला शरीर के काम आता है और दूसरा शरीर वाले अर्थात् आत्मा के काम आता है। संतुलित जीवन के लिए दोनों का संतुलन आवश्यक है। दूसरे शब्दों में धन वह जड़ सम्पत्ति है जो किसी चैतन्य प्राणी की आवश्यकताओं या अनिवार्यताओं (Necessities) की पूर्ति करते हुए उसे वर्तमान में सुखी करता है या विलासिताओं की पूर्ति करते हुए उसे भविष्य में दुखी करता है। सतयुग के गुणवान मनुष्य सुख-शान्ति से संपन्न थे और कलियुग के गुणहीन मनुष्य दुख व अशान्ति से विपन्नता में हैं।

साथ जाता है सूक्ष्म धन

स्थूल धन या तो प्रकृतिकृत होता है जैसे कि वन-वनस्पति, जल-खनिज पदार्थ, हीरे-जवाहरात इत्यादि या मनुष्यकृत होता है जैसे कि आवास, वस्त्र, आभूषण, मुद्रा, वाहन व विभिन्न जीवनोपयोगी वस्तुएं। प्रकृति-प्रदत्त धन सारे प्राणियों के लिए है परन्तु इसका बंटवारा या तो प्राणियों में आपसी सहमति से होता है या जोर-जबर्दस्ती से या फिर पिछले जीवन के पाप या पुण्य के आधार से। स्थूल धन अचल होता है, जो चल मनुष्य का साथ मात्र शरीर रहने तक देता है परन्तु सूक्ष्म धन है ज्ञान, आत्मिक गुण-शक्तियां व श्रेष्ठ कर्मों से बनी प्रालम्ब, जो चल होते हैं और शरीर

छूटने पर भी आत्मा के साथ चले जाते हैं। अतः यह कहना सही नहीं है कि मनुष्य खाली हाथ आता है और खाली हाथ जाता है। धनवान मात्र स्थूल बैंक-बैलेन्स के द्वारा ही नहीं हुआ जाता बल्कि गुणों से, आदतों से, दूरदर्शिता से, अनुशासन से, संतुष्टता से, किस्मत से और सच्चे मित्रों से भी धनवान हुआ जाता है।

धन की चाकरी करें या उसे चाकर बनाएँ

धन स्थूल हो या सूक्ष्म, उसका महत्व सदुपयोग से है। स्थूल धन चाहे वीरान पड़ा महल हो या लॉकरों में कई पीढ़ियों से कैद जेवरात हों, उपयोग न आने पर ये मिट्टी के समान हैं। उसी प्रकार सूक्ष्म ज्ञान-धन यदि आचरण में व दूसरों को सुख देने, अज्ञानी की सेवा करने के काम में न आए तो स्पष्ट है कि ज्ञान आत्मा से निकल कर कर्मन्द्रियों में फैला नहीं है। ज्ञान जब गुण में बदल कर आचरण में आता है तब ही यह ज्ञान-धन कहलाता है। तब यह कानों से मात्र सुनाई नहीं देता बल्कि आँखों से दिखाई भी देता है। मनुष्य को प्रकृति से सर्वश्रेष्ठ दैहिक रचना और ईश्वर से श्रेष्ठ ज्ञान, गुण व शक्तियाँ उपयोग हेतु मिली हैं। कोई यदि आलस्य में रहे या काम से जी चुराये तो उसके हाथ-पांव, मुख आदि पांच तत्वों का पिंड या ढेर ही कहा जायेगा। चैतन्य शरीर का जड़-पिंड में बदल जाना ही तो मृत्यु है। ऐसे 5 तत्वों के पिंड को जब सर्जन मृत घोषित कर देते हैं, तो इसका विसर्जन कर दिया जाता है अर्थात् उस पिंड को श्रद्धापूर्वक प्रकृति के सुपुर्द कर दिया जाता है। आज श्रद्धा व पिंड-दान आदि तो किया जाता है परन्तु न तो श्रद्धा दिखती है न दूसरों के कल्याण हेतु चैतन्य शरीर का पिंड-दान। चैतन्य पिंड-दान अर्थात् दधीचि मिसल देह को जगकल्याण हेतु स्वाहा करना। इसकी एक मिसाल ब्रह्माकुमार जगदीश भाई थे। ऐसे लोभ-शून्य, सर्वस्व त्यागी, परोपकारी, संतुष्ट मनुष्यों को ही ज्ञान, गुण व शक्तियों की ईश्वरीय अकूत सौगात मिलती है। जब स्थूल धन प्राथमिकता पाता है तो मनुष्य सूक्ष्म धन को नकार कर

स्थूल-धन की चाकरी करने लगता है (कलियुग) और जब सूक्ष्म धन उपयोग में आता है तो स्थूल धन मनुष्य का चाकर बन जाता है (सतयुग)। सूक्ष्म-धन है अविनाशी व खरा जबकि स्थूल-धन है विनाशी व खराब हो जाने वाला।

धन पराजित हुआ गुणों के आगे

अनाथपिण्डक अपने समय का सबसे बड़ा कंजूस था। अनाथपिण्डक अर्थात् जिसका धन समाज के काम न आए और जिसका शरीर (पिण्ड) केवल अपने परिजनों के मोहाकर्षण में बंधा हो। अनाथपिण्डक अपने नालायक बेटे से परेशान था। एक बार उसे पता चला कि महात्मा बुद्ध आए हुए हैं और उनसे ज्ञान-धन (प्रवचन) लेने बड़े-बड़े लोग भी जाते हैं। अनाथपिण्डक भी प्रवचन सुनने गया और उसे लगा कि यदि मेरा बेटा प्रवचन सुनेगा तो उसमें बदलाव आएगा। उसने अगले दिन बेटे को महात्मा बुद्ध के पास जाने को कहा तो बेटे ने मना कर दिया। अनाथपिण्डक ने कहा कि यदि तू सत्संग सुन कर आएगा तो मैं तुझे सोने के सौ सिक्के दूँगा। उसका बेटा सत्संग में गया और लौट कर अपने पिता से सौ सिक्के ले लिए। सिक्के जब मौज-मस्ती में खत्म हो गए तो अनाथपिण्डक ने उसे फिर लालच दे कर गौतम बुद्ध के पास भेजा। यह क्रम और चला। चौथी बार जब बेटा गया तो वापस नहीं लौटा। जब अनाथपिण्डक उसे बुलाने को गया तो बेटे ने लौटने से मना कर दिया। उसने महात्मा बुद्ध से दीक्षा ले कर बौद्ध-मार्ग स्वीकार कर लिया था। गुणों के आगे धन की शक्ति पराजित हो गई। अनाथपिण्डक उदास हो गया क्योंकि वह तो बेटे से अपने धन को संभलवाना चाहता था परन्तु बेटे ने तो धन की बजाय गुणों को अपनाने के लिए आध्यात्मिक मार्ग चुन लिया। ऐसा हुआ ज्ञान की समझ से।

धन रूपी करेण्ट

चैतन्य शरीरों को दौड़ा देता है

धन की तुलना बिजली के करेण्ट से की जा सकती है। वो करेण्ट तो केवल तार (wire) में दौड़ता है (तार स्थिर

रहता है) परन्तु धन रूपी करेण्ट तो चैतन्य शरीरों को दौड़ा देता है। चाहे बीमार व्यक्ति हो या कोई अपंग, कहीं से धन प्राप्त हो रहा हो तो वह उस दिशा में दौड़ पड़ता है। यदि अतिरिक्त काम (ओवरटाइम) मिलना हो तो बीमार, सुस्त या कामचोर कर्मचारी भी कार्य पर मुस्तैद दिखाई देता है। धन की करेण्ट से रुकी हुई फाइलें दौड़ने लगती हैं, रुके हुए काम पूरे हो जाते हैं, असहयोगी भी सहयोग करने लगते हैं, बदसूरत लड़की या लड़के की शादी हो जाती है, गंभीर बीमार व्यक्ति को भी बेहतर चिकित्सा मिल जाती है, बड़े-बड़े समारोह व आयोजन संपन्न हो जाते हैं और सबसे बढ़ कर, व्यक्ति अपने भविष्य के प्रति इतना बेफिक्र हो जाता है जैसे कि वह कभी मरेगा ही नहीं। यहां तक कि खाट पकड़ चुके वृद्ध व्यक्ति का थका हुआ चेहरा भी अचानक प्राप्त धन की करेण्ट से खिल उठता है। एक वृद्ध दुकानदार का जब अन्तिम समय आया तो सारे रिश्तेदार उसके इर्द-गिर्द इकट्ठे हो गये। वृद्ध ने मंद आँखों से क्षीण स्वर में पूछा, प्रकाश (बड़ा बेटा) कहाँ है? बेटा बोला कि मैं आपके सिराहने हूँ। वृद्ध ने पूछा, सोहन (मंझला बेटा) कहाँ है? बेटा बोला, मैं यह रहा आपके दाहिने तरफ। वृद्ध ने पूछा, मुंशी जी कहाँ है? मुंशी जी ने हाथ दबा कर कहा, आपके सामने ही तो हूँ। वृद्ध ने चिल्ला कर कहा कि सारे यहाँ बैठे हो तो दुकान बंद कर दी क्या? ग्राहकी तोड़ने पर तुले हो सारे!! यह धन की आसक्ति ही है, जो मृत्युशैथ्या पर पड़े व्यक्ति में भी धन की करेण्ट सांसों की करेण्ट से रेस करती रहती है और ईश्वरीय स्मृति की अन्तिम रेस मनुष्य हार जाता है।

शिवबाबा है गरीब-निवाज

समाज या तो धनी व्यक्ति का महत्व स्वीकार करता है या ज्ञानी व्यक्ति का। कलियुग में ज़रूरी नहीं कि ज्ञानी व्यक्ति रुपये-पैसे से धनी भी हो। वर्तमान स्थूल धन एक गुणहीन, महत्वहीन व्यक्ति के पास जाकर उसे महत्वपूर्ण बना देता है और धन के समाप्त होते ही वह पुनः महत्वहीन हो जाता है

परन्तु ज्ञानी मनुष्य सदा महत्वपूर्ण बना रहता है क्योंकि ज्ञानवान मनुष्य का यह ज्ञान-धन न तो छीना जा सकता है, न त्यागा जा सकता है, न कभी अप्रासंगिक हो सकता है और न ही स्थूल धन की तरह नष्ट ही हो सकता है। जो श्रद्धा और सम्मान ज्ञानी को मिलता है वो एक धनाढ्य को नहीं मिलता। ज्ञानी व धनाढ्य, दोनों एक-दूसरे का सम्मान करते हैं। महत्व है ज्ञान का जो एक हीन, दीन व खिन्न मनुष्य को भी औरों से भिन्न अर्थात् पूर्ण बना देता है। यदि इसे बांटा जाए, तो भी यह खत्म नहीं होता है। ज्ञान-धन दीनदयाल, दीनबंधु या दीनानाथ शिव से ही प्राप्त किया जा सकता है। शिव बाबा खुद को गरीब-निवाज भी कहते हैं। गरीब, निवाज (कृपा) करने वाले के करीब होते हैं जिससे उनकी विशेषता जल्दी प्रकट हो जाती है।

कहानी है अल्लादीन के चिराग की। देखा जाए तो अल्लाह (शिव) को जब दीन (दरिद्र, दुखी) सर्व सम्बन्ध जोड़ कर अपना बनाते हैं तो अल्लाह उनकी आत्मा रूपी चिराग में ज्ञान का घृत डाल कर उन्हें 21 जन्मों की चिरकालीन सुख-शान्ति प्राप्त कराते हैं। आत्मा रूपी चिराग में शिव बाबा ज्ञान का घृत डालते हैं, तो बच्चों को योग का कृत करना होता है। एक तरफे प्रयास से बात नहीं बनती। लौकिक में भी यदि बाप का प्रयास पूरा हो और बेटे का आधा-अधूरा, तो बाप की आशाएँ पूरी नहीं हो पातीं। चिराग अर्थात् चिर-आग या आत्मा रूपी बैट्री की करेण्ट जो 84 जन्मों तक चलती है और 21 जन्मों तक सुख-शान्ति का पूरा प्रकाश देती है। परन्तु अभी मनुष्यों का अपने घर-परिवार से ऐसा चिर-राग (मोह) है जो अल्लाह के ज्ञान से राग नहीं होने देता। अल्लादीन के चिराग से जिन्न प्रत्यक्ष होता था जो सेकेण्ड में आना-जाना करता था। शिवबाबा भी बच्चों को कहते हैं कि जिन्न माफिक मुझे याद करो अर्थात् पुरानी दुनिया से जीते-जी मर कर जिन्न की तरह बन जाओ तो परमधाम जाना और आना एक खेल हो जायेगा और याद की यात्रा में मेहनत खत्म हो जायेगी। (क्रमशः)

बनने वाले से बनाने वाला बड़ा

ब्रह्माकुमार देवेन्द्रनारायण पटेल, मुंबई (मुंबुड)

एक राजा की सवारी जा रही थी। राजा के सिपाही आगे-आगे जाकर रास्ता खाली करवा रहे थे। एक गरीब फकीर रास्ते से हटने को तैयार नहीं था। उसने कहा, मैं क्यों हटूँ, मैं भी राजा हूँ, मैं तो यहाँ ही बैठूँगा। सिपाहियों ने यह बात राजा को बता दी, राजा को गुस्सा आया और आश्चर्य भी लगा। वह फकीर के पास गया और कहने लगा, कौन है तू? राजा ऐसा होता है क्या? उसके पास तो कीमती रेशमी वस्त्र होते हैं, तेरे पास फटे हुए वल्कल (झाड़ की छाल से बने हुए वस्त्र) के सिवा कोई और वस्त्र होंगे, लगता नहीं है। फकीर ने कहा, मैं वल्कल से संतुष्ट हूँ और तुम रेशमी वस्त्रों से। हमारे और आपके बीच संतोष तो एक समान ही है। आप में विशेष क्या है? राजा ने फिर पूछा, तेरे पास कोई खजाना है? महात्मा ने जवाब दिया, मुझे किसी भी चीज़ की कामना नहीं इसलिए मैं कोई खजाना रखता नहीं हूँ। कामना छूटे, सारी चिंता छूटे, जो व्यक्ति आत्मचिंतन की मस्ती में डूबा हुआ रहता है वही सबसे अधिक सुखी और समृद्ध है। जिसे कोई तृष्णा नहीं वही सच्चा शहशाह है।

त्याग के आगे झुका ऐश्वर्य

राजा ने कहा, तू शहशाह है तो तेरी सेना और सवारी कहाँ है? फकीर ने जवाब दिया, मुझे सेना और सवारी की क्या जरूरत है? सेना तो वह रखता है जिसका कोई दुश्मन हो, जिसे आक्रमण का कोई भय हो। राजा ने आदेश दिया, इसको कैदखाने में डाल दो। साधु ने कहा, ज्यादा से ज्यादा तू क्या दंड देगा? देहांत ही ना। मैं कहाँ देह हूँ। मैं तो आत्म-स्वरूप हूँ। तुम कहते हो तो देह के बंधन को छोड़ देता हूँ पर क्या तेरे में ऐसी हिम्मत है? ऐसा कहते हुए पास में जलती हुई कुम्हार की भट्टी की ओर फकीर चलने लगा। राजा को ख्याल आ गया कि यह कोई महान त्यागी और उच्च कोटी की आत्मा है। वह दौड़कर उसके पीछे गया, रास्ते में ही उसे रोक दिया और क्षमा मांगने लगा। इस प्रकार त्याग के आगे ऐश्वर्य झुक गया।

बड़ा वही है जिसे कुछ नहीं चाहिए

शिवबाबा भी हम बच्चों को कहते हैं, बच्चो, इस दुनिया में कोई इच्छा-आश मत रखो। इच्छा मात्रम् अविद्या रहो। इच्छा, अच्छा बनने नहीं देती। जिसे कुछ चाहिए माना वह भिखारी है, जिसको कुछ भी नहीं चाहिए वही इस दुनिया में बड़े से बड़ा है। गांधी जी आज़ादी के बाद खुद ही प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति बन सकते थे, उनके हाथ में था परंतु नहीं बने, दूसरों को बनाया इसलिए 'राष्ट्रपिता' कहलाये। ब्रह्माबाबा संस्था की स्थापना के बाद संस्था प्रमुख बन सकते थे किंतु नहीं बने, मम्मा को मुख्य प्रशासिका बनाया, इसलिए वे 'प्रजापिता' कहलाये। जयप्रकाश नारायण जनता पार्टी की सरकार की स्थापना के बाद स्वयं प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति बन सकते थे परंतु नहीं बने, दूसरों को बनाया इसलिए 'लोकनायक' बन गये। शिवबाबा को भी कुछ नहीं चाहिए। सबकुछ बच्चों को दे देते हैं। नवविश्व की स्थापना करते हैं परंतु खुद राज्य करने नहीं आते, बच्चों को विश्व महाराजा-महारानी बनाते हैं इसलिए दुनिया में उनका नाम है, हम उन्हें 'भगवान' या 'विश्वपिता' कहकर पुकारते हैं। याद रखिए, बनने वाले से बनाने वाला बड़ा हो जाता है। करनहार से करावनहार महान होता है। हिन्दी में कहावत है, लेने वाले के हाथ से, देने वाले का हाथ हमेशा ऊपर रहता है।

थोड़ा मान मिले, यह मिले, वह मिले, यह बन्नू, वह बन्नू, यह करूँ, वह करूँ, यह पद मिल जाये, वो पद मिल जाये ऐसी इच्छाएँ क्यों? अरे वह सब मिल जाने के बाद भी देने वाले तो हमसे 'बड़े' ही कहलायेंगे। इसलिए यह सबकुछ छोड़ो। मुझे कुछ नहीं चाहिए। मेरा तो एक शिवबाबा, दूसरा कुछ नहीं। जिन्हें इस दुनिया में कुछ नहीं चाहिए वे ही सबसे महान हैं। उन्हें ही लोग पूजेंगे, याद करेंगे। वे ही विश्व महाराजन् कहलायेंगे। ❖

छोटी-सी पुस्तिका – सन्देश महान

ब्रह्माकुमार डॉ. कामेन्द्र, डालटनगंज (झारखंड)

जब मैं झारखंड राज्य के पलामू जिले में सह मुख्य चिकित्सा पदाधिकारी बना तो मेरे ही मुहल्ले में रहने वाली बहन जी, अन्य दो बहनों तथा भाइयों के साथ मेरे घर पधारीं तथा मुझे एवं मेरी पत्नी को राखी बांधी और प्रसाद खिलाया। साथ में उपहार स्वरूप टेबल कैलेन्डर, जिसमें साल के 365 दिनों के लिए सुविचार लिखित हैं, दिया और 'आज का विचार' नामक एक पुस्तिका भी दी। मेरे बरामदे के टेबल पर वह कैलेन्डर आज भी रखा है जिसे सभी आने-जाने वाले अतिथि देखते हैं तथा प्रभावित होते हैं।

मैं हर रोज प्रातः भ्रमण के पूर्व उस दिन के विचार को पढ़कर उसे स्थिर कर देता हूँ तथा प्रयास करता हूँ कि उस पर दिन भर अमल करूँ। मेरे विचार तथा व्यवहार पर इस कैलेन्डर से भी अधिक प्रभाव 'आज का विचार' नामक पुस्तिका का पड़ा है।

इस पुस्तिका में वर्णित विचार जीवन के कटु सत्य हैं तथा संतों एवं महान आत्माओं के अनुभवों की उपज हैं। इसलिए ये विचार हर काल, देश तथा दशा में अनुकूल, ताजे, जीवनदायी तथा प्रेरणास्पद बने रहेंगे। सप्ताह के हर दिन की अपनी विशेषता है तथा इसी अनुरूप विचार भी दर्शाये गए हैं जैसे रविवार – परमानन्द, सोमवार – शान्ति, मंगलवार – प्रेम, बुधवार – शक्ति, बृहस्पतिवार – परमज्ञान, शुक्रवार – पवित्रता, शनिवार – दया।

मैं परमानन्द को जीवन का हिस्सा बनाने की सरल व्याख्या करने का प्रयास करूँगा।

मानव युगों-युगों से इन्द्रिय सुखों के लिए सतत् संघर्षशील रहा है। इससे न कभी तृप्ति मिली है, न संतुष्टि लेकिन एक बार आनन्द की अनुभूति हो जाये तो संतुष्टि भी मिल जाती है तथा तृप्ति भी। परमानन्द आत्म साक्षात्कार है। जो व्यक्ति दूसरे से कम तथा स्वयं से अधिक बातचीत करेगा वही आत्म साक्षात्कार कर

सकता है। अपने आचार-विचार पर हमेशा ध्यान रखने वाला जागरूक व्यक्ति ही परमानन्द प्राप्त कर सकता है। हर रोज स्वयं से वार्ता स्थापित करने के लिए एकान्त में मौन धारण करें। एकान्त का अर्थ निर्जन स्थान नहीं है। एक व्यक्ति भीड़ में रहकर भी एकान्तवासी हो सकता है। इसका अर्थ है, अपने अन्तःस्थल की गहराई में धीरे-धीरे उतरना तथा मन के विचारों को कम करते जाना। मौन का अर्थ है संसार से वार्ता समाप्त कर स्वयं से, आत्मा से बातें करना तथा उसकी सुनना। इससे अनुभव करेंगे, दुनिया में रहते हुए भी, सब क्रियाकलाप करते हुए भी हमारे सभी विचार अन्तर्मुखी होते जा रहे हैं। हमें प्रजापिता ब्रह्मा के समान आनन्द स्वरूप, शान्ति स्वरूप, प्रेम स्वरूप की अनुभूति होने लगेगी। आनन्द का वास्तविक अर्थ है कि मनुष्य सुख एवं दुख से ऊपर उठ जाये। जहाँ आनन्द है वहाँ सुख या दुख हैं ही नहीं बल्कि समय भी ठहरा हुआ-सा प्रतीत होता है, बस, शान्ति तथा प्रेम की अनुभूति होती है।

मैंने पुस्तिका के विचारों को जीवन में अपनाने का प्रयास किया है, आनन्द की अनुभूति हो रही है तथा क्रमशः बढ़ती जा रही है। पाठकों से निवेदन है कि निम्नलिखित विचारों को आचार में उतारने का प्रयास करें तथा अभूतपूर्व आनन्द का अनुभव पायें –

1. प्रसन्नता एवं संतुष्टि के साथ, बिना स्वार्थ एवं भेदभाव के सबको खुशी का दान दें। खुशी के दान के लिए आपको स्वयं खुश रहना होगा।

2. सारे संबंध ईश्वर से स्थापित करने का प्रयास करें। जब सर्व संबंध ईश्वर से स्थापित हो जायेंगे तो किसी से कोई शिकवा-शिकायत, क्रोध, घृणा, ईर्ष्या, द्वेष नहीं रहेगा। केवल आनन्द ही आनन्द रहेगा। आप हर रविवार (छुट्टी के दिन) 15-30 मिनट एकान्त में मौन धारण कर इन्हें आचार में उतारने का प्रयास करें। शिव बाबा परमानन्द की वर्षा ज़रूर करेंगे। ❖

मूल्य, प्रत्यक्ष दिखने पर ही प्रभावशाली

ब्रह्माकुमारी स्नेहा पगडकर, कोल्हापुर

रंगबिरंगे फूल अगर सुगंधित हों तो मन को भाते हैं, वैसे ही आचरण में लाये हुए मूल्य प्रभावशाली बनते हैं। भारत में बचपन से ही मूल्यों के बारे में बच्चों को बताया और सिखाया जाता है। धार्मिक पुस्तकें भी पढ़कर सुनाई जाती हैं ताकि पता चले कि हमारे पूर्वज कितने मूल्यनिष्ठ थे। अहिंसा, विश्वास, ईमानदारी, सत्य, आदर इत्यादि मूल्यों की जानकारी होते भी उनका प्रभाव हमारे समाज में दिखाई नहीं देता है। इसका कारण है कि जानते हुए, मानते हुए, समझते हुए भी हम मूल्यों को व्यवहार में लाना जरूरी नहीं समझते। धीरे-धीरे हम मूल्यों को भूलते जा रहे हैं, इससे स्वयं के साथ-साथ परिवार और समाज का भी नुकसान हो रहा है। व्यक्ति को आदर्श बनने के लिए मूल्यों को धारण करना बहुत जरूरी है। मूल्य प्रभावशाली तभी होते हैं जब वे आचरण में आते हैं। आपसी व्यवहार में अगर हम मूल्य देखेंगे तो हमें भी मूल्य धारण करने की प्रेरणा मिलेगी। मूल्य आचरण में आने पर ही प्रभावशाली होते हैं, इस संबंध में कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं –

पाठशाला में मूल्य

पाठशाला में एक विद्यार्थी ने गलत उत्तर लिखा। शिक्षक की गलती से उसको उसके लिए भी अंक प्राप्त हो गए। लेकिन वो विद्यार्थी ईमानदारी से शिक्षक को वो उत्तर दिखाकर अपने अंक कम कराता है, तब शिक्षक पूरी कक्षा के सामने उस विद्यार्थी की प्रशंसा करके, ईमानदारी के लिए उसको इनाम देता है। यह देखकर अन्य विद्यार्थियों को ईमानदार बनने की प्रेरणा मिलती है। वैसे तो विद्यार्थी ईमानदारी के बारे में पहले से जानते थे लेकिन प्रत्यक्ष प्रमाण देखने के बाद उस मूल्य का ज्यादा प्रभाव पड़ा।

स्वतंत्रता काल में मूल्य

स्वतंत्रता काल में अहिंसा, सहनशीलता आदि मूल्यों का काफी प्रभाव रहा। उसका कारण था कि राष्ट्रपिता

महात्मा गांधीजी में इन मूल्यों की धारणा उच्च कोटि की थी। कितनी ही बार उन्होंने सहनशील बन अहिंसा के मार्ग से सफलता प्राप्त की। इन मूल्यों को प्रत्यक्ष देख लोगों को स्वयं में धारण करने की प्रेरणा मिली। आचरण में आए इन मूल्यों ने भारत को स्वतंत्र कराने में सहायता प्रदान की।

परिवार में मूल्य

परिवार में भी हम देखें, अगर माँ-बाप अपने माता-पिता से सम्मानपूर्वक व्यवहार करते हैं तो उनके बच्चे भी 'सम्मान' मूल्य को सहज ही अपनाते हैं। लेकिन अगर माँ-बाप खुद अपने माता-पिता के साथ आदरपूर्वक व्यवहार नहीं करते हैं और बच्चों को सिर्फ कहते रहते हैं कि बड़ों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करना चाहिए तो ऐसा व्यवहार वे बच्चे नहीं कर पाते और परिवार में बच्चों को लेकर तनाव पैदा होता है।

वर्तमान समय हम सभी भ्रष्टाचार-मुक्त भारत देखना चाहते हैं। सरकार इसके लिए कड़े कानून भी बना रही है, फिर भी भ्रष्टाचार और ही ज्यादा पनप रहा है। भ्रष्टाचार से मुक्त होने के लिए लालच को छोड़ना पड़ेगा और उसकी जगह आत्मसंयम, त्याग आदि मूल्य अपनाने पड़ेंगे।

अगर हम मूल्यों को व्यक्तियों के आचरण में प्रत्यक्ष प्रमाण के रूप में देखें तो मूल्यों का ज्यादा प्रभाव पड़ता है। इसके लिए मूल्यों को पहले हमें अपने जीवन में अपनाना पड़ेगा जिसका अच्छा प्रभाव परिवार-समाज पर पड़ेगा। लोग जो कुछ देखते हैं, आसानी से उसकी नकल करते हैं लेकिन सुनी हुई, लिखी हुई बात पर ज्यादा ध्यान नहीं देते। मूल्यों की धारणा के श्रेष्ठ उदाहरण हमें ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में देखने को मिलते हैं। यहाँ आने वाला हर एक व्यक्ति स्वयं परिवर्तन कर, विश्व परिवर्तन के कार्य में सहयोगी बन रहा है। स्वयं में मूल्य धारण कर समाज को मूल्यनिष्ठ बनाने के लिए ब्रह्माकुमारीज का ज्ञान अवश्य लें।

ग्लोबल हास्पिटल में डायबिटीज़ शिविर

ब्रह्माकुमारी दर्शना, गुड़गाँव

मैं पिछले 26 सालों से डायबिटीज़ से जूझ रही थी। जब शरीर पर प्रभाव दिखाई देने लगा तो न जाने कितने अस्पतालों में चक्कर लगाए। किसी ने एक देशी वैद्य के बारे में बताया तो किसी ने दूसरे के बारे में। फिर भी हालत में सुधार नहीं हुआ। मसूड़ों में सूजन, जीभ पर छाले, डायरिया आदि अनेक शारीरिक व्याधियों ने मुझे घेर लिया था।

रात को सोती तो पाँव में चींटियाँ-सी चलने लगती, दर्द होने लगता जिस कारण नींद भी नहीं आती थी। फिर नींद की गोली लेती थी। आँखों की दृष्टि बहुत कमजोर हो गई। भाव यह है कि डायबिटीज़ के आतंक ने पूरे शरीर पर कब्जा कर लिया था।

इतना सब कुछ होने के बावजूद, भगवान ने कर्मगति का जो ज्ञान दिया है, उसके स्मरण के कारण मैं कभी निराश-हताश नहीं हुई। शिवभगवानुवाच, बच्चे, जो भी स्थूल या सूक्ष्म आप किसी को दे रहे हो, याद रखो, सूद समेत आपके पास ही लौटकर आएगा, यही प्रकृति का शाश्वत नियम है।

एक बार मुझे ग्लोबल हास्पिटल (आबू पर्वत) में आयोजित होने वाले डायबिटीज़ शिविर की जानकारी मिली। मैं भी वहाँ पहुँच गई शिविर करने और पूरे 21 दिन भर्ती रही। बड़े प्यार, बड़ी आत्मीयता से मेरा इलाज शुरू हुआ। वहाँ पर नाश्ते तथा भोजन में बड़े स्वास्थ्यवर्धक पदार्थ देते थे। समयप्रति समय दूध, सूप, दही, फल, सलाद आदि-आदि मिलता रहता था। सुबह व शाम 6 बजे से 7 बजे तक म्यूज़िक के साथ व्यायाम करवाते थे। दो समय पाँवों की थैरेपी देते थे। पहले मैं सारा दिन थकी-थकी-सी रहती थी, अब चुस्त रहने लगी। डायबिटीज़ ने शक्तिहीन



बना दिया था क्योंकि शरीर में इंसुलिन बन ही नहीं रहा था। तीन समय इंजेक्शन पर रहना पड़ता था। अभी इंसुलिन और दवाइयाँ बहुत कम हो गई हैं। पुराना शरीर है, नया तो हो नहीं सकता परन्तु मैं 50 प्रतिशत ठीक हो गई हूँ। मुंह के छाले ठीक हो गए हैं, यूरिन कंट्रोल में आ गया है, डायरिया ठीक हो गया है। पैरों से अब सैर करने भी जा सकती हूँ। मैं डॉक्टर श्रीमंत भाई जी एवं उनकी पूरी टीम की आभारी हूँ जिन्होंने मुझे जीने की नई शैली सिखाई।

कहा गया है, “गिरते हैं ख्याल तो गिरता है आदमी, जिसने इन्हें संभाला, वो महान बन गया।” मेरा अनुभव तो यही कहता है कि चाहे कितने भी शारीरिक हिसाब-किताब हों या परिस्थितियाँ हों, कभी घबराइए मत, हमेशा सकारात्मक चिन्तन रखिए, इससे मनोबल बना रहेगा। डायबिटीज़ को साधारण मत समझिए, स्वयं भी जागिए और दूसरों को भी जगाइए।

अगर आप प्राइवेट हास्पिटल में एक लाख रुपये खर्च करते हैं तो यहाँ 1/3 में ही इलाज हो जाता है क्योंकि यहाँ भावना ही दूसरों को सुख देकर दुआएं हासिल करने की है। अंत में इस हास्पिटल के बारे में यही कहूँगी, यह हास्पिटल नहीं, एक मन्दिर है जहाँ राहत मिलती है तन के साथ मन को भी। ❖

‘ज्ञानामृत’ मेरी ‘अलौकिक माँ’

ब्रह्माकुमार विजय, मण्डी डबवाली (हरियाणा)

‘ज्ञानामृत’ मेरी ‘अलौकिक माँ’ है। मुझे नया जन्म देने वाली है। सन् 2005 में सड़क दुर्घटना में मेरे पूरे शरीर पर चोटें आईं एवं टांग में फ्रैक्चर हो गया था, दांत टूट गये थे। टांग का आपरेशन हुआ और लगभग चार महीने चारपाई पर लेटना पड़ा। घर की हालत पहले ही नाजुक थी, दुर्घटना के बाद और भी बिगड़ गई। सारे मित्र, रिश्तेदार मुँह मोड़ चुके थे।

खुलने लगे मन के कपाट

मेरी लौकिक माँ काफी समय से ब्रह्माकुमारीज पाठशाला में जाया करती थीं और दुर्घटना से पहले मुझे भी एक बार अपने साथ ले गई थी लेकिन मैं दोबारा वहाँ नहीं गया क्योंकि मुझे कुछ खास अच्छा नहीं लगा था। दुर्घटना के बाद जब अस्पताल से छुट्टी मिली तो घर पर चारपाई पर आराम करता था पर बहुत तकलीफ हुआ करती थी। इस दौरान मेरी लौकिक माँ ब्रह्माकुमारीज पाठशाला से मेरे पढ़ने के लिए ज्ञानामृत पत्रिकायें लेकर आईं और कहने लगी, ये पढ़ोगे तो तुम्हें अच्छा लगेगा, समय भी पास होगा। मैं लेटा-लेटा ज्ञानामृत पत्रिकायें पढ़ने लगा। इनमें प्रकाशित लेख मेरे लिए वरदान साबित होने लगे। मुझे यह पत्रिका बहुत अच्छी लगने लगी। मुझमें एक शक्ति का संचार होने लगा। परमपिता परमात्मा का सच्चा ज्ञान मेरे दिलो-दिमाग में बैठने लगा। मेरी लगन भी ज्ञान में बढ़ने लगी। माँ द्वारा लाई गई अनेक नई-पुरानी ज्ञानामृत पत्रिकायें मैंने पढ़ीं और मुझे सत्य ज्ञान का आभास होने लगा। भाई-बहनों के अनुभव, ज्ञान से सुसज्जित लेख, संजय की कलम से, सम्पादकीय लेख पढ़कर मन के कपाट खुलने लगे। फिर तो जब चारपाई से उठा तो लाठी पकड़कर धीरे-धीरे चलकर ब्रह्माकुमारीज पाठशाला जाने लगा। माँ के साथ नित्य क्लास करने लगा।

स्वर्ग में आने की महसूसता

इसके कुछ दिनों बाद बहनों ने मधुबन जाने के लिए कहा,

तो मैं झट तैयार हो गया। ज्ञान सरोवर में आकर ऐसा अनुभव प्राप्त हुआ जो जीवन भर भुलाया नहीं जा सकता। हारमनी हॉल में टीचर बहन ने आगे की पंक्ति में बैठा दिया और पहले दिन स्वागत सत्र में कन्याओं द्वारा इतने सुंदर ढंग से स्वागत गीत पर नृत्य किया गया जो कभी नहीं भूल सकता। ऐसा महसूस हो रहा था जैसे स्वयं परमपिता परमात्मा ने अपनी गोद में बिठा लिया और अब इतना सुन्दर स्वागत भी कर रहे हैं। परिस्थिति आने पर ज़माने ने जिससे मुँह मोड़ लिया, स्वयं भगवान ने उसे अपनी गोद दी, इसी महसूसता के कारण आँखों से अश्रुधारा रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी। मन ही मन प्यारे बापदादा का शुक्रिया कर रहा था। इतना सुन्दर वातावरण, बढ़िया मौसम, सुन्दर रहन-सहन, खान-पान देख कर स्वर्ग में आने की महसूसता हो रही थी।

ज्ञान सरोवर की सीढ़ियाँ चढ़ते-उतरते मेरी टांग भी काफी हद तक मुड़ने लगी थी। चार दिन की यात्रा मेरे जीवन का सबसे सुन्दर अनुभव रहा। उसके बाद जैसे-जैसे ठीक हुआ, काम-धंधा भी शुरू किया और काम भी अच्छा चलने लगा। फिर तो मधुबन में अनेक बार आने का सुअवसर प्राप्त हुआ, कभी गाइड बनकर, सभी सेवाधारी बनकर और बापदादा से मिलन भी कई बार मना चुका हूँ। तब से लेकर आज तक कभी भी मुरली मिस नहीं की। बहुत-बहुत मदद मिल रही है बापदादा की।

अन्त में ज्ञानामृत के लिए यही कहूँगा कि यह पत्रिका जन-जन तक पहुँचे। जैसे मेरे लिए पथ-प्रदर्शक बनी ऐसे ही अनेक आत्माओं को भी सच्ची राह पर ले जाने के निमित्त बने।



ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : omshantipress@bkivv.org, gyanamritpatrika@bkivv.org Ph. No. : (02974) - 228125



1. राजमुन्त्री- आंध्रप्रदेश के गृहमंत्री भाता एन.विन्नाराज्या कुभ मले का उद्घाटन करते हुए। साथ में ब.कु. रजनी बहन। 2. दतिया- आध्यात्मिक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मध्य प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री डॉ.नरोत्तम मिश्रा, नगरपालिका अध्यक्ष भाता सुभाष अमवाल, ब.कु.दोषा बहन, ब.कु.हरोरा (जादूगर) तथा अन्य। 3.दिल्ली (दिलशाद गार्डन)- दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष भाता रामनिवास गोयल को ईश्वरीय प्रसाद देते हुए ब.कु.गीता बहन। 4.गुलबर्गा (आदर्श नगर)- कर्नाटक के नगरपालिका प्रशासन और गुलबर्गा जिले के प्रभारी मंत्री डॉ.जनाब ववामरुल इस्लाम, ब.कु.विजया बहन को सम्मानित करते हुए। 5.जबलपुर (धनवन्तरी नगर)- मध्यप्रदेश के स्वास्थ्य राज्यमंत्री भाता शरद जैन तथा महापौर बहन स्वाति गोडबोले को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब.कु.भावना बहन। 6.उज्जैन (कोयला फाटक)- 'योग द्वारा स्वस्थ एवं सुखी संसार' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए मध्य प्रदेश के शिक्षा मंत्री भाता पारस जैन, पार्यद ऋतुबाला व्यास, ब.कु.ऊषा बहन तथा ब.कु.निरूपमा बहन। 7.केन्द्रापड़ा- उड़ीसा के स्वास्थ्य मंत्री भाता ए.सत्यसाचो नायक को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब.कु.रमा बहन। साथ में विधायक भाता किशोर चन्द्र तराई। 8.हाधरस (आनंदपुरी कालोनी)- मंगलायतन विश्वविद्यालय के कुलपति बिगोडियर सुरजीत सिंह पावला को आबू पर्वत आने का निमंत्रण एवं ज्ञानामृत पत्रिका देते हुए ब.कु.रान्ना बहन। 9.काठमाण्डू नेपाल- नेपाल में भारत के राजदूत भाता रणजीत राय को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब.कु.किरण बहन, डॉ.प्रताप मिश्रा, ब.कु.करुणा भाई, ब.कु.रामसिंह भाई तथा ब.कु.किशोर भाई। 10.भोपाल- राष्ट्रीय मीडिया महासम्मेलन का उद्घाटन करते हुए मध्यप्रदेश के ऊर्जा, खनिज संसाधन एवं जन सम्पर्क मंत्री भाता राजेन्द्र शुक्ल, भाता कमल दीक्षित, वरिष्ठ पत्रकार भाता विनोद नागर, भाता एन.के.सिंह, ब.कु.अवधेश बहन तथा अन्य।



1. दिल्ली (द्वारका)-

नवनिर्मित 'सुख-शान्ति भवन' के उद्घाटन अवसर पर नामपट्टिका का अनावरण करते हुए दादी हृदयमोहिनी जी। साथ में ब्र.कु. वृजमोहन भाई तथा अन्य।



2. शान्तिवन (आबू रोड)-

धार्मिक प्रभाग के द्वारा आयोजित 'परमात्म शक्ति द्वारा महापरिवर्तन का समय' विषयक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. गोदावरी बहन, स्वामी अनिरुद्ध महाराज (वृंदावन), स्वामी केशवानंद सरस्वती (सीतापुर), ब्र.कु. मनोरमा बहन, ब्र.कु. नारायण भाई, स्वामी रामदिनेशाचार्य महाराज (अयोध्या), ब्र.कु. रामनाथ भाई, श्री 1008 स्वामी शिवस्वरूपानंद (जोधपुर) अब्दुल लतीफ (अयोध्या) तथा ब्र.कु. सोमप्रभा बहन।



3. ज्ञानसरोवर (आबू पर्वत)-

व्यापार एवं उद्योग प्रभाग द्वारा आयोजित सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. योगिनी बहन, भ्राता एम.एल.शर्मा, अल्ट्रा टेक सीमेंट की उपाध्यक्षा बहन सपना कपूर, ब्र.कु.गीता बहन तथा अन्य।



4. शान्तिवन (आबू रोड)-

जलपरिवहन, विमानन तथा पर्यटन प्रभाग द्वारा आयोजित 'डिजाइन यूवर लाइफ जर्नी' विषयक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए ए.ई.आर.ए. के अध्यक्ष भ्राता एस.मवेन्द्रनाथन, ब्र.कु.डॉ.निर्मला बहन, ब्र.कु.मीरा बहन, ब्र.कु.ओमप्रकाश भाई तथा अन्य।